प्रेम पत्र



प्यारे दोस्त डा० कर्णसिंह

सादर प्रणाम।

आप कश्मीर की वादी के महाराजा हैं इसलिये आपको सलाम लगाना मेरा फर्ज बनता है। यानि मैं आपकी शरण में आऊं तो इसका मतलब यह नहीं है कि देश के लोग भी आपकी शरण में पहुँच रहे हैं।

आप शरद पवार की शरण में बम्बई सम्मेलन में इस आशा से पहुँचे कि आपको कुछ पावर मिल जायेगी। परन्तु उस समय आप यह भूल गये कि आप इससे पहले श्रीमती इन्दिरा गांधी की शरण में रह चुके हैं। इन्दिरा जी की शरण में रहकर आपने न केवल नागरिक उड्डयन मंत्रालय के मजे उड़ाये बल्कि स्वास्थ्य मंत्रालय में भी अपना वजन बढ़ाया। यह बात और है कि आपने नसबन्दी प्रोग्राम पर इतना जोर दिया कि देश में सरकार की अदला-बदली करवा दी।

जब आपने यह देखा कि अब कांग्रेस के हाथ में सत्ता नहीं है और लड्डू-पेड़े मिलने का कोई अवसर नहीं है तो आप कांग्रेस के बंटवारे में जुट गये। यह ठीक है कि उस समय आपको इसमें सहारा देने वाले और भी बड़े-बड़े मिनिस्टर थे। लेकनि वे आज कुछ नहीं हैं।

जब आपने यह कोशिश की कि इन्दिरा गांधी का नाम कांग्रेस से मिट जाये तब शायद आपको चिकमगलूर का सपना नहीं आया था। यह ठीक है कि एक तरह से आपने जनता पार्टी की शरण में जाकर इन्दिरा गांधी को लोक सभा से हटा देने में मदद की लेकिन चिकमगलूर के लोग तो अब भी इन्दिरा गांधी के भक्त हैं और रहेंगे।

शरद पवार जी आपकी मदद से बम्बई क्षेत्र के छोटे-मोटे नेता तो रह सकते हैं परन्तु आप उनकी मदद से देश के नेता नहीं रह सकेंगे।

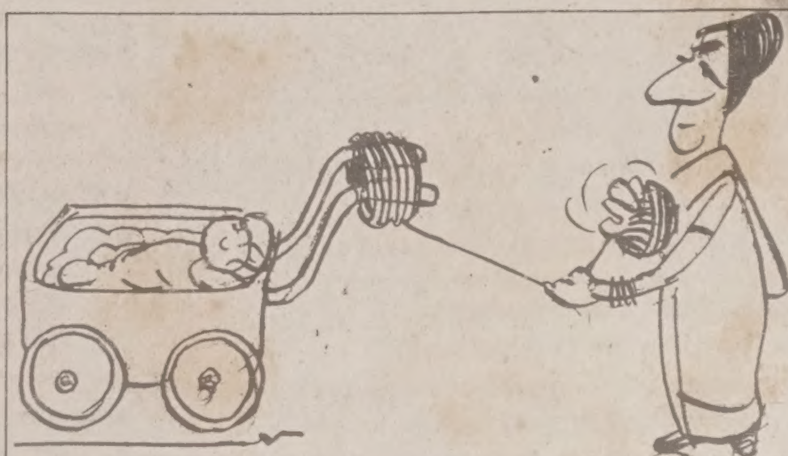
आपकी सेवा में यह सुझाव देना चाहता हूँ कि राजनीति में आगे बढ़ने के लिये आप हारे हुये राजा-महाराजाओं की एक नई पार्टी बनाकर उसके अध्यक्ष बन जायें।

आपका

चिल्ली

मुख पृष्ठ पर

एक गली के नुक्कड़ पर
चिकित्सालय का बोर्ड लगा
वहां पहुँचने के लिये, कोई
इधर भगा कोई उधर भगा।
चिल्ली ने जब देखा सब कुछ
जानते हो तब क्या किया?
परेशानी न हो लोगों को
दस्ताना उस पर लगा दिया॥



दीवाना

अंक : २, ११ जनवरी से १७ जनवरी १६७६ तक
वर्ष : १५

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाही: २५ रु०
वार्षिक: ४८ रु०
द्विवार्षिक: ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एव अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

काका के कारतूस

[illegible] के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के



विजय आचार्य—इन्दौर

प्र० : 'मरने के बाद दीवाने कहाँ जाते हैं ?

उ० : हँसते-हँसते मर गए, गए स्वर्ग के द्वार ।
'दीवाना' को पढ़ रहे, सारे पहरेदार ॥

माणिक श्रेष्ठ, कलिंग बाजार, नेपाल

प्र० : काका जी, देखते-देखते सपना मेरा क्यों टूट गया ?

उ० : जीवन भी इक स्वप्न है, जिस दिन जाए टूट ।
नई देह फिर से मिले, जाय बुढ़ापा छूट ॥

जगजीत सिंह राना, इंदुबाला शर्मा, दिल्ली

प्र० : काका जी, औरत का दिमाग अच्छा होता है या मर्द का ?

उ० : किसी मर्द का होय जब, दिल-दिमाग कुछ सुस्त ।
शादी होने पर इसे, औरत करे दुरुस्त ॥

नेपाल चन्द्र, जयातपुर, (२४ परगना)

प्र० : मजबूरी और गरीबी में क्या अन्तर है ?

उ० : मजबूरी का नाम जयप्रकाशनारायण जानो ।
कुर्सी छोड़ गरीबी आई, उसको एक्स मिनिस्टर मानो ॥

आशा शर्मा, दुर्ग (म० प्र०)

प्र० : बच्चों को कोई बात मार से समझाई जाए या प्यार से ?

उ० : हो जाएं वे निकम्मे, जिन पर पड़ती मार ।
आगे बढ़ते रहेंगे, मिलता रहे दुलार ॥

इन्द्रकुमार नारवानी, बिलासपुर

प्र० : प्यार किस चिड़िया का नाम है और उसके लाभ ?

उ० : प्रेम-नेम-श्रद्धा मिले, हों प्रसन्न भगवान ।
प्रेम-चिरैया उड़ा दें, उन्हें निर्दयी जान ॥

शिवशंकर मिश्रा, संपाल डिह, कोलबाशरी

प्र० : भारत पहले सोने की चिड़िया था, लेकिन अब ?

उ० : लाठी जिसकी भैंस उसी की, मसल हुई मशहूर ।
चिड़िया उनकी, जो पिंजड़े पर शासन करें हुजूर ॥

विजय गोयल, पानीपत

प्र० : काका जी, आपको कौनसी फिल्म अच्छी लगी ?

उ० : सर्वश्रेष्ठ हमको लगी, बॉबी, धार्मिक फिल्म ।
घर की चाबी खो गई, भूल गए सब इल्म ॥

हरि ओम बंसल, मुरैना (म० प्र०)

प्र० : अगर काकी जी आपसे कहें कि मैं तो ताजमहल खरीदूंगी, तो आप क्या करेंगे ?

उ० : बिकें आगरे में बहुत ताजमहल-मॉडल ।
दे दूं लाकर के उन्हें, होय समस्या हल ॥



विनयकुमार नवेसर, वाराणसी

प्र० : अमुक आदमी मरकर स्वर्ग गया है या नर्क, ये मालूम हो ?

उ० : अगर स्वर्ग में आपको मिले न वह इन्सान ।
समझ लीजिए, नर्क में पहुंचे वे श्रीमान् ॥

किशोर नारंग, रिवर साइड रोड, इंदौर

प्र० : प्यार की परिभाषा लड़के जल्दी समझते हैं या लड़

उ० : लड़की-लड़के घूमते, जब दोनों संग-संग ।
साथी हो जिस ढंग का, वैसा चढ़ता रंग ॥

सुरेशकुमार शर्मा, मुंगेर (बिहार)

प्र० : जब इन्सान की शादी होती है, तो लोग आगे-आ हैं और जब मर जाता है तो पीछे-पीछे क्यों चलते हैं ?

उ० : दूल्हा के आगे चलें, गाजे-बाजे-ढोल ।
मरने वाले का नहीं, कुछ भी रहता मोल ॥

शशि जैन, फीरोजपुर छावनी

प्र० : बोतल हो इक बगल में और हाथ में हो जाम ।
आ जाए काकी सामने तो होय क्या अंजाम ?

उ० : बोतल तकिया के तले, दबा देंय झटपट्ट ।
प्याले में पानी भरें, पीजाएं गटगट्ट ॥

अनिल कुमार अभागा, दरभंगा (बिहार)

प्र० : काका काका धूम-धड़ाका, कविता पर क्यों डालें डा

उ० : जिस दिन नहीं डालते डाका, उस दिन करना पड़ता
इसीलिए रोजाना कविता लिखते हो रहते हैं

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।	**काका के कारतू** दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर नई दिल्ली-११००


रोपकारी
ी जी
अरे रामानन्द कैसे हो? बहुत ही दिन हो गए तुम्हें देखे हुए।
बुरा हाल है मेरा। जिस लड़की से मैं प्यार करता हूं वह मुझ से शादी करने से इन्कार कर गई है
अरे यह लड़कियों का मामला तो ऐसे ही होता है।
पकारी जी मैं क्या न खा पाता हूं न सो पाता हूं।
कोई बात नहीं, अपने धंधे में मग्न हो जाओ, अपने काम में डूब जाओ और वक्त के साथ-साथ सब ठीक हो जायेगा।
शायद आप ठीक ही कह रहे हैं।
जाओ सब ठीक हो जाएगा।
ों बाद
त्यारे, तुम्हारे ही रे रामानन्द का यह
पर चाचा मैंने तो उसे नेक सलाह दी थी– अपने काम में डूबे रहने की
हां, और जानते हो उसका काम क्या था? स्विमिंग पूल में कोच था और तुम्हारी बात मानकर मेरा रामानंद खुदखुशी करने लगा था। शुक्र है भगवान का, जो वह बच गया। अरे दुष्ट चला जा यहां से।
हे राम!
THE NATIVE


तुमने रामायण में केवल बाल कांड ही क्यों पढ़ा? मैंने सभी कांड पढ़ने के लिये कहा था!
बाकी के कांड मैंने अखबारों में पढ़ लिये हैं पिता जी!
अखबारों में?
जी हाँ। संजय कांड, कांति देसाई कांड, सुरेश राम कांड.... रंगा बिल्ला कांड......

भारत के दीवाने खेल

कौन कहता है कि भारत खेलों में और देशों से पिछड़ा हुआ है ? भारत खेलों में बहुत आगे है । केवल समस्या यह है कि हर अन्तर्राष्ट्रीय खेल को भारत अपने ढंग से और अपने ही नियमों से खेलता है इसी कारण अन्तर्राष्ट्रीय मुकाबलों में हारता है । हमारे ढंग के खेल दुनिया स्वीकार करे तो कोई भारत को नहीं हरा सकता । विदेशी शक्तियों द्वारा किये भारत के विरुद्ध षड्यन्त्र के कारण ही ऐसा नहीं हो पा रहा है । आप जरा भारतीय शैली में अंतर्राष्ट्रीय खेलों का मुलाहिजा कीजिये । पेश है यह फीचर—



घूंसेबाजी

यह खेल दफ्तरों में खेला जाता है । अफसर और प्रार्थी अफसर की टेबल के आर-पार बैठ कर खेलते हैं । इस खेल में टेबल के नीचे हजारों रुपयों का आदान-प्रदान होता है । यानि घूंस लिया जाता है ।



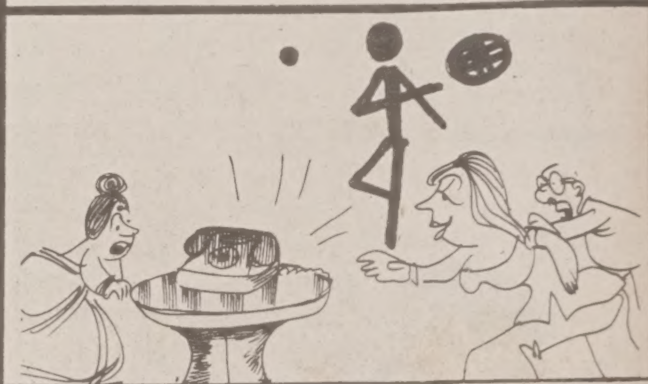
हांकी

हांकी भारतीयों का प्रिय खेल है । इसमें खिलाड़ियों को चमचे के नाम से पुकारा जाता है । उसका खेल अपने आका की हर बात में हां मिलाना होता है । राजनीतिज्ञों के पास ऐसे दर्जनों खिलाड़ियों की टीमें होती हैं ।



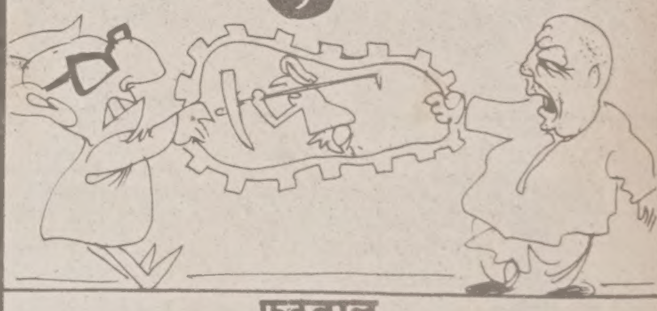
रोइंग

यह खेल हमारे नेता लोगों में बहुत लोक प्रिय है । इस खेल में गरीबों और हरिजनों की दुर्दशा पर खिलाड़ी मगरमच्छ के आंसू बहाते हैं । रोते हैं ।



टिन्निस

टिन्निस का खेल उन घरों में खेला जाता है जहाँ फोन होता है । फोन की टिन-टिन की घंटी बजती है, सब घर वाले फोन मेरा है ,मेरा है, कह कर दौड़ते हैं जो सबसे पहले रिसीवर उठाता है वही जीत जाता है ।



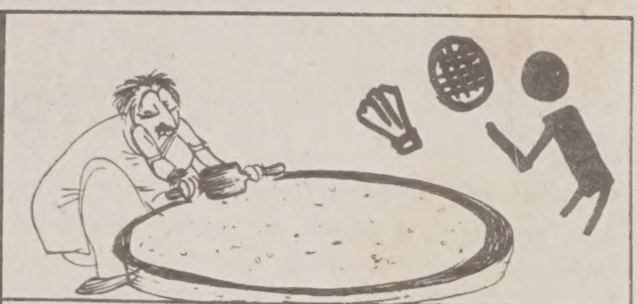
फूटबाल

फूटबाल भारतीय राजनीति का मुख्य खेल है इसमें खिलाड़ी हर पार्टी, हर गुट, हर जत्थे और हर मंडली में फूट डालते हैं और उसके दो टुकड़े कर देते हैं । ओलम-पिक्स में यह खेल शामिल किया गया तो भारत का कोई मुकाबला नहीं कर पायेगा ।



जूड़ो

जूड़ों का खेल भारतीय महिलायें खेलती हैं। खेल में भाग लेने वाली महिलायें विभिन्न आकार और प्रकार के नये जूड़े बना कर एक-दूसरे की नीचा दिखाने की कोशिश करती हैं। मुकाबला यह होता है कि किसका जूड़ा लेटेस्ट फैशन का है।



ब्रैड मिन्टन

यह खेल सारे भारतवासी खेलते हैं। जैसे नाम से साफ है ब्रैड यानि रोटी के लिये सारे भारतवासी कई-कई तरह के पापड़ बेलते हैं। जो हेरा-फेरी छाप पापड़ बेलता है वह जीत जाता है।



साकीइंग

साकीइंग का खेल पति-पत्नी में होता है। तनख्वाह वाले दिन पति साकी खाने यानि शराब घर जाकर देर से नशे में धुत घर लौटता है। घर में बीबी लड़ने के लिये पहले ही तैयार होती है! इस मुकाबले में हैमर थ्रो, बॉक्सिंग, फ्री स्टायल, फैंसिंग और जूडो कराते का एक अनोखा मिला-जुला रूप प्रस्तुत किया जाता है।



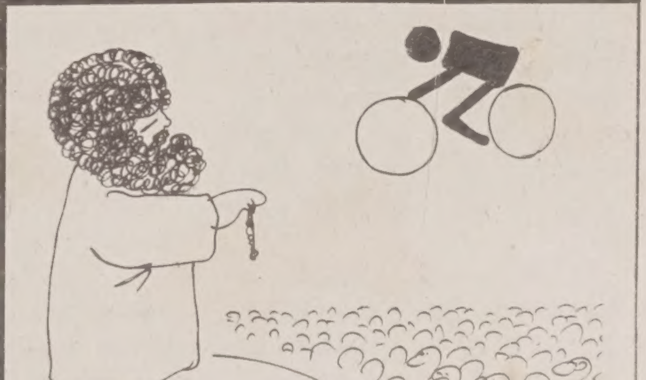
जीमना स्टिक्स

जीमना स्टिक्स खेल प्रायः पंडित लोग खेलते हैं। इस खेल में खिलाड़ी लड्डू, पेड़ों के थाल के थाल जीमता जाता है। अन्त में हालत यह हो जाती है कि स्टिक्स यानि लाठी के सहारे बड़े मुश्किल से वह ड्रम सा पेट लेकर घर की ओर रवाना होता है।



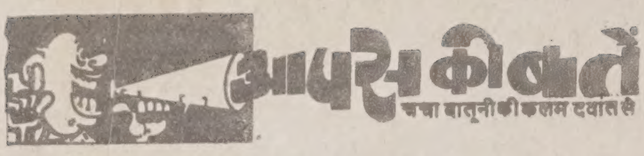
गोलफ

गोलफ के खेल में चतुर खिलाड़ी साइक्लोन, अकाल, महामारी, बाढ़, भूचाल, गौशाला और अनाथालयों के नाम पर चन्दा इकट्ठा करता है। और बाद में सारा फंड गोल कर जाता है! इसीलिये इसे गोलफ कहते हैं।



साईक्लिंग

इस गेम में खिलाड़ी स्वयं को साईं बाबा, महर्षि या भगवान आचार्य कहता है और कई हजार चमचे चेलों को अपने साथ क्लिंग कराता है यानि चिपका लेता है जो सबसे ज्यादा चमचे चिपका लेता है वही विजेता होता है।



अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

आई० के० सेठी—मलोट : आपने चाचा चौधरी क्यों बन्द कर दिया ?

उ० : क्योंकि हम उससे भी अधिक रोचक एक चित्र कथा आरम्भ करने वाले हैं जिसका शीर्षक होगा, "चाचा की चौधराहट"

हरजिन्द्र पाल चावला—संदियाला, चुरु : चाचा जी, क्या जनता पार्टी के लीडरों को पता नहीं है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी को कुछ हुआ तो लोग उनका खाना-पीना हराम कर देंगे ।

उ० : क्या पीना हराम कर देंगे ? आहिस्ता बोलिये कहीं कोई "बड़े कानों वाला" न सुन ले ।

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : जो भगवान को मानते हैं, ईश्वर उन्हीं को अधिक दुःख क्यों देता है ?

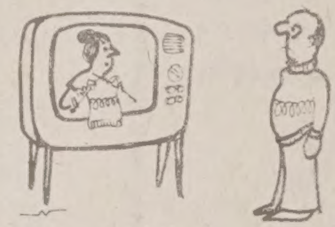
उ० : कहते हैं भगवान सबको एक आंख से देखता है । (क्या काना है ?) जी नहीं, कहते हैं न्याय की आंखों पर पट्टी बंधी होती है । भगवान न्याय है, इस लिये हम कहते हैं भगवान अंधा है । यह मान लेने के बाद यह तो आप मानेंगे ही कि जिसके पास जो कुछ होता है वह अपनों को वही देता है । यह कहावत तो अपने सुनी होगी, "अंधा बांटे रेवड़ियां मुड़-मुड़ अपनों को दे ।

शिवसरन सिंह चौहान,—उखड़ी : अंकल, आपके भतीजों की कुल संख्या कितनी है ?

उ० : उन दीवानों की संख्या हम कैसे बतायें ? जितनी देर में हम दस लाख तक गिनते हैं, उतनी देर में पांच दस हजार और बढ़ जाते हैं ।

दिनेश मटाई, 'राजा'—इन्दौर : चाचा जी, क्या आपको कभी किसी ने लवलैटर लिखा है ?

उ० : कई बार लिखा है । और हमने हर बार सोचा है कि उस लैटर का मैटर होगा : भूल कर ओ चांद के टुकड़े इधर आजा कभी, मेरे वीराने में भी हो जाये दम भर चाँदनी । पर आमतौर पर उसमें लिखा होता है
चांद देखी आपकी तो वह लगी इतनी भली,
चोंच में कौआ लिये हो जैसे मिसरी की डली ।



मदन किशोर होतवानी—रायपुर : क्या दूसरों के सहारे जिंदगी के दिन गुजारने वाला खुश रह सकता है ?

उ० : जी हां, जैसे आप हमारे सहारे खुश हैं और हम आपकी जेब में एक रुपये के सहारे खुश हैं ।

मनोजकुमार भारद्वाज, अबोध—मुरादाबाद : चाचा जी हम दीवाने तो हैं, मगर दो चीजों के । एक दीवानगी तो आप हर सप्ताह दूर कर देते हैं, पर दूसरी के लिये क्या करें ?

उ० : अपने बालों की जड़ों पर सूखा करेला रगड़ कर उन्हें मजबूत कर लीजिये । बाकी जो कुछ करना है, वह कोई और कर लेगा ।

पवन खत्री 'बैरागी'—इन्दौर : अधिक सुन्दरता या अधिक कुरूपता अभिशाप है, तो ठीक क्या है ?

उ० : मन की सुन्दरता को महत्व देना ।

चन्द्रलाल, अभागी—नेपाल : कोई प्यार की नजर से देखे तो मैं क्या करूं ?

उ० : ट्रकों वाले तो नजर से बचने के लिये अपनी गाड़ी के आगे जूती लटका लेते हैं । और पीछे लिखते हैं, 'बुरी नजर वाले तेरा मुंह काला ।" आगे लटकाने और पीछे लिखने के लिए आप की कमर पर थोड़ी बहुत जगह तो होगी ही ।

एजाज अख्तर—भवानीपुर : समय बड़ा है, या मौत ?

उ० : दोनों ही बड़े हैं और दोनों इस शेर से जुड़े हैं :

उल्टी हो गई सब तदबीरें, कुछ
ना दवा ने काम किया,
आखिर इस बीमारिये दिल ने
अपना काम तमाम किया ।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर : आप कहां के निवासी हैं ?

उ० : ऐसी कोई गाली हममें नहीं जुड़ी है । हम केवल भारत वासी हैं । और किसी एक प्रांत का होने से अन्तर क्या पड़ता है ? क्या डीमापुर के पागलों और दिल्ली के पागलों में कोई फर्क होता है ।

डा० सतीन्द्र जैन, 'सुदर्शी'—जबेरा : गुलाब के फूल के साथ कांटे क्यों होते हैं ?

उ० : हम क्या बतायें, इस प्रश्न का उत्तर तो नीली छतरी वाला भी नहीं दे सकता कि चौधरी चरण सिंह के साथ राजनारायण क्यों है ?

राम अवतार सिंह—अलवर : पीने पिलाने के बारे में आप का क्या विचार है ?

उ० : हम आप का मतलब नहीं समझे । क्या आप 'वह' पीने की बात पूछ रहे हैं, जिसके बारे में श्री मोरारजी भाई देसाई कहते हैं कि 'इसकी' मालिश भी करनी चाहिये ? अगर आप का मतलब, जाम, साकी और मैखाने से है, तो उसके बारे में अर्ज किया है :

नजर मिला के नजर से जो दे दिया साकी,
उस एक जाम पे कुर्बान लाख मैखाने ।

राजेश खन्ना, 'पप्पू'—लुधियाना : मैं कुछ पुराने दीवाना मंगवाना चाहता हूं, पता बताइये ?

उ० : सरकूलेशन मैनेजर, दीवाना तेज साप्ताहिक ८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ ।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

आंखें भीग गयीं।

नये वातावरण में एक विचित्र-सा अजनबीपन था। आरम्भ में सुशील का दिल बहुत घबड़ाया। वह पहले ही रविवार को भागने की सोच रहा था, लेकिन उसे रुक जाना पड़ा। इसका कारण सीमा थी, वह शनिवार की दोपहर को अचानक ही आ गई थी।

सुशील यूनिवर्सिटी से आकर लेटा ही था कि सीमा ने दरवाजे में कदम रखा।

यह सीमा से दूसरी मुलाकात थी। मुलाकात तो बिल्कुल सरसरी थी। सीमा का कद औसत था। रंग सांवला, लेकिन चेहरा आकर्षक था। विशेष रूप से उसके होंठ तो हर समय पुकारते दिखायी देते थे। लगता था उनमें ऐसी प्यास भरी हुई है। जो कभी बुझ न पाएगी।

जब वह अपने शहर में थी तो सुशील



से दूर-दूर रहा करती थी। रंजन को छोड़ कर उसके घर का हर व्यक्ति यही समझता था कि सुशील मुफ्त में रोटियां तोड़ रहा है। लेकिन आज सीमा को देखकर सुशील को उसमें एक असाधारण परिवर्तन दिखायी दिया। सीमा ने नमस्ते की थी। उसकी आँखों में सुशील के लिए आदर की भावना थी।

'आओ सीमा, बैठो! कैसे चली आयीं? पढ़ायी कैसी चल रही है? स्टडी शुरू कर दी या नहीं?' सुशील ने पूछा।

सीमा सुशील से एक वर्ष ही छोटी थी। तुम कहकर बात किया करती थी लेकिन आज वह सुशील को आप कहकर सम्बोधित कर रही थी।

'आपसे मिलने चली आयी।'

'यहाँ अकेले तो बोर होती होगी?'

'बहुत ज्यादा। दिल बहुत घबड़ाता है। आपके आने से आशा हो गई है कि अब अधिक बोर न होऊँगी।'

'यानी बोझिल कुछ कम हो जायेंगी?'

'जरूर···आप हर वक्त तो साथ रहेंगे नहीं?'

'फिर तुम घर रहकर क्यों नहीं पढ़तीं? बी० ए० करने के बाद यहाँ चली आतीं।'

'मैंने सोचा जब यहां आना ही है तो पहले ही चली आऊं।'

'पहले-पहल मेरे कमरे में आई हो। ठहरो! तुम्हारे लिए चाय बनाता हूँ।'

'आप तो ऐसे कह रहे हैं जैसे कोई बुजुर्ग शरारती बच्चे को धमकाता है कि ठहरो, अभी बताता हूं।' सीमा मुस्कराकर बोली, 'मेरे होते हुए आप चाय बनाएंगे? जी चाहेगा तो मैं खुद बना लूंगी। अगर आपका मूड हो तो अभी बनाए लेती हूँ।'

'नहीं, मैं तो तुम्हारे लिए कह रहा था। शाम को बस स्टेशन पर ही चाय पिऊँगा।'

'बस स्टेशन पर? क्यों?'

'आज घर जाने का इरादा है।'

'अरे वाह, मैं अकेली बोर होऊँगी। कल ही का दिन तो मिला है।'

'तो तुम भी चलो मेरे साथ।'

'नहीं। वहाँ तो जी और भी घबड़ायेगा। सच बात यह है कि वहाँ मुझे देहातीपन लगता है। क्या आप मेरे लिए रुक नहीं सकते?'

'असल में ऐसा है कि···।'

'मैं बताऊँ क्या है!' सीमा ने शोखी से कहा, 'आप मधु की वजह से जा रहे हैं।'

सुशील को आश्चर्य हुआ और कुछ झेंप भी मालूम हुई।

'तुम मधु को जानती हो?'

'उसे कौन नहीं जानता? यहाँ तक जानते हैं लोग कि आप दोनों में···!' वह कहते-कहते रुक गयी।

सुशील का चेहरा लाल पड़ गया। बात बदलने के लिए वह बोला—

'तो क्या प्रोग्राम है कल का?'

'मैं सुबह आ जाऊँगी। फिर हम लोग पिकनिक पर चलेंगे। उसके बाद पिक्चर देखकर वापस घर।'

'अगर मैं न होता तो?'

'जब आप नहीं थे, प्रोग्राम तब भी बनते थे और आप न रहेंगे तब भी बनेंगे। बस अन्तर इतना होगा कि आपके रहने पर कुछ ज्यादा मजा आयेगा।'

कुछ देर ठहरकर चली गयी।

कुछ ऐसा संयोग हुआ कि सुशील अगले रविवार को भी न जा सका। वह भी सीमा के कारण ही।

सीमा बहुत आगे बढ़ चुकी थी। सुशील के कारण वह कुछ झिझकती थी। अगर उस ने सीमा का साथ छोड़ दिया तो वह हाथ से बिल्कुल ही निकल जायेगी। फिर वह रंजन को क्या मुंह दिखाएगा।

समय बीतता रहा।

मधु के लिए जो बेचैनी थी वह बढ़ती जा रही थी। लेकिन वह कर्तव्य का पालन कर रहा था। जब से आया था, पत्र नहीं लिख पाया था—यही सोचकर कि रविवार को तो जाना ही है। मधु का भी कोई पत्र नहीं आया था। रंजन का दो-तीन लाइनों का पत्र चौथे दिन नियमित रूप से आ जाता था। उसी से मधु की कुशलता मालूम हो जाती थी।

एक दिन वह यूनिवर्सिटी से ही सीमा के साथ सिनेमा चला गया। सिनेमा हॉल में से निकला तो सीमा ने उसे एक वकील साहब से मिलाया जो सीमा के मित्र थे। वे उन दोनों को अपने घर ले गये।

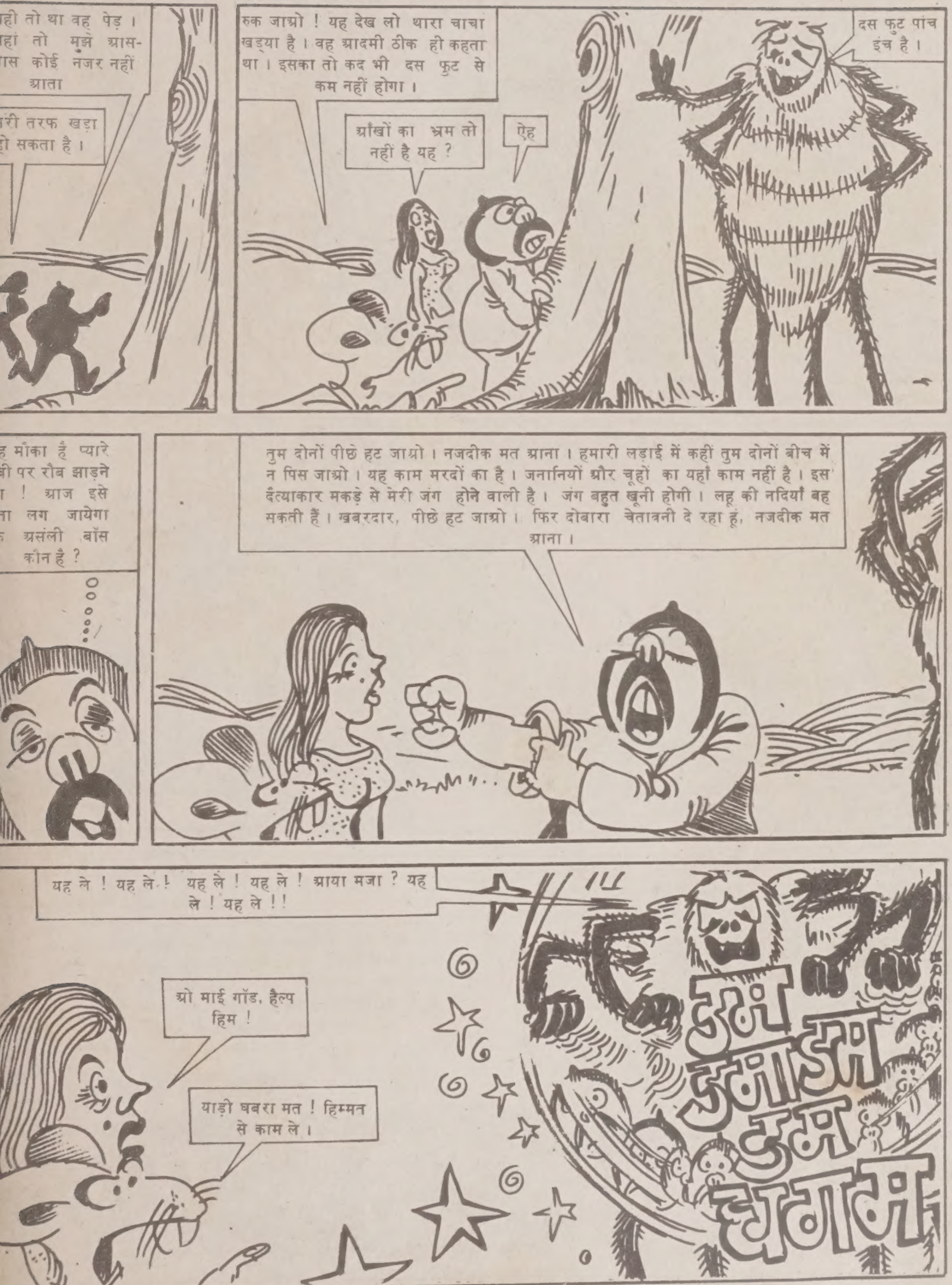
वह रात गये लौटा।

सुशील ने दरवाजा खोलकर बत्ती

शेष पृष्ठ ४० पर



सर्दियों की सुहानी धूप खिली थी। दफ्तर में काम नहीं था अतः दफ्तर पिलपिल के हवाले कर सिलबिल, रूबी और गरीबचन्द शहर से दूर एक जगह पिकनिक मनाने का प्रोग्राम बनाकर आते हैं।
यही जगे ठीक रहेगी।
बैठ जाओ नर्म नर्म घास पर
बचाओ, बचाओ। भागो यहां से नहीं तो वह मार कर खा जायेगा।
क्यों क्या हुआ? क्या हुआ?
ऊका पौंगा! ऊका पौंगा!!
ऊका पौंगा? क्या बला है यह ऊकापौंगा?
तुमको नही पता? आजकल इस इलाके में ऊकापौंगा नाम के दैत्याकार अढ़ाई मन वजन के मकड़े ने तहलका मचा रखा है। बकरे और मुर्गे तक खा जाता है!
थमारा दिमाग तो ठिकाने है? कहीं कोई मकड़ा अढ़ाई मन का हो सकता है? भंगवाली बर्फी तो नहीं खाई? कहाँ है जरा हमको भी दिखाओ?
ऊका पौंगा
भाग कहाँ रहा है? हमें ले चल उस ऊकापौंगा के बच्चे के पास। हम तेरे सामने ही उसे ठीक कर देंगे। बड़े-बड़े फन्ने खां और तीस मार खां हमारी मार खाकर सीधे हो चुके हैं।
कोई सौ रुपये दे तो भी मैं उस ओर नहीं जाऊँगा। वह उधर पहाड़ी के पीछे जो पेड़ है उसके पास खड़ा है जाकर देख लो।
जिस तरह यह आदमी घबराया हुआ था उसे देखकर तो लगता नहीं कि झूठ बोल रहा है वह। उसके चेहरे पर सचमुच ही खौफ की छाया थी।
आधा फर्लांग दूर ही तो है वह पेड़। चलो चलकर देख लेते हैं कि बात सच्ची है या इस आदमी का दिमाग चल गया है।
चलो देखें



ही तो था वह पेड़ । हां तो मुझे आस-पास कोई नजर नहीं आता
री तरफ खड़ा हो सकता है ।
रुक जाओ ! यह देख लो थारा चाचा खड़्या है । वह आदमी ठीक ही कहता था । इसका तो कद भी दस फुट से कम नहीं होगा ।
आँखों का भ्रम तो नहीं है यह ?
ऐह
दस फुट पांच इंच है ।
ह मौका है प्यारे भी पर रौब झाड़ने ! आज इसे ना लग जायेगा क असली बॉस कौन है ?
तुम दोनों पीछे हट जाओ । नजदीक मत आना । हमारी लड़ाई में कहीं तुम दोनों बीच में न पिस जाओ । यह काम मरदों का है । जनानियों और चूहों का यहाँ काम नहीं है । इस दैत्याकार मकड़े से मेरी जंग होने वाली है । जंग बहुत खूनी होगी । लहू की नदियाँ बह सकती हैं । खबरदार, पीछे हट जाओ । फिर दोबारा चेतावनी दे रहा हूं, नजदीक मत आना ।
यह ले ! यह ले ! यह ले ! यह ले ! आया मजा ? यह ले ! यह ले !!
ओ माई गॉड, हैल्प हिम !
याड़ी घबरा मत ! हिम्मत से काम ले ।
ढम ढमाढम ढम धगम


देखा मैंने क्या कहा था कि जंग खूनी होगी। देखो अभी से मेरी नाक से खून बहने लगा है। तुम दोनों पीछे हट जाओ। अभी तो मैंने लड़ना शुरु ही नहीं किया। मैं सौ तक गिन रहा हूं। मुझे गुस्सा ज़रा देर से आता है फिर देखना तमाशा, मैं क्या करता हूं इसका ?
अब तक तो गिनती पूरी हो गयी होगी सौ तक ?
एक दो···चल हो जा शुरू, तीन चार······घूंसा मार, पाँच छः···लगा मुक्के, सात आठ···खड़ी कर खाट।
प्लीज स्टॉप इट
नौ दस··· बस बस !
आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों से बना है। पौष्टिक औषधि डाबर च्यवनप्राश का सेवन कीजिए। यह अब विदेशों में भी जाती है।
INTERVAL
आप ठीक से तो हैं ? चोट ज्या लगी है ?
कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। तुम दोनों चिन्ता मत करो। असल में मैं गिनती करता-करता सौ पर रुकना भूल गया और···और गिनता ही चला गया। जब उसने मुझे पटका तो मैं ग्यारह सौ सैंतीस की गिनती पर पहुँच चुका था। लेकिन अब तमाशा देखना तुम।



मैं इस मकड़े के बच्चे को यह कहने पर मजबूर करूंगा कि तू मेरा बाप है। तुम देखना! अब हट जाओ दूर तुम दोनों।
इस पर उछल-उछल कर इसे जिन्दा धरती में गाड़ दूंगा।
कचूमर कचूमर
अच्छा भाइयों मैं चलता हूँ। तुम जीते रहे तो फिर मिलेंगे। मुझे लड़ाई में मजा भी नहीं आ रहा है। अब इस मीटर बैंड पर हमारी आज की सभा खत्म होती है। जयहिंद!
सिलबिल को खोद कर निकालना पड़ेगा
देखा फिर तुमने? मैंने उसे बाप कहने पर मजबूर कर दिया।
तुम दोनों भी सच्चे हो, दर्द के मारे मैं जो चीख रहा था उस शोर में उसकी आवाज दब गयी होगी।
कब? उसने तुम को बाप माना लेकिन हमने तो सुना नहीं।
उसने अपने बाप के तीन दांत भी तोड़ दिये।
इब भाग रिया है? ठहर, भागता कहां है? बचकर कहां जायेगा? डरपोक कहीं का! लड़ाई का मैदान छोड़कर भाग गया! मैं तुझे छोड़ूंगा नही।
भगवान के लिए अब तो जरा होश की बात कीजिए। उठिये और पहले तो घर चलकर घावों की मरहमपट्टी करें।
तुम मेरी बात को मजाक समझ रही हो? अभी तो उसने मेरा सबसे भयानक हथियार नहीं देखा है।
किस सबसे भयानक हथियार की बात कर रहे हैं यह?
मेरे ख्याल में तो इनका मतलब आंसुओं से होगा। उसी की कसर रह गई थी। शायद यह रोकर उसके पांव पकड़कर मांफी मांग लेगा। आंसू औरत का सबसे बड़ा हथियार है, यह औरत मर्द में फर्क नहीं मानता होगा।

बाकी अगले अंक में

आपके पत्र

दीवाना का अंक ४१ प्राप्त हुआ। चिल्ली को क्रिकेट-प्लेयर बना देख दिल गार्डन-गार्डन हो गया। चिल्ली लीला बेहद पसन्द आई। चिल्ली द्वारा चौ० चरण सिंह को लिखा प्रेम-पत्र वाकई ही प्रेम से परिपूर्ण था। अन्य स्थाई स्तम्भ परोपकारी, बात-बे-बात की, पंचतन्त्र, पिलपिल-सिलबिल, तथा मोटू-पतलू ने हंसा-हंसा कर दीवाना बना दिया। 'हमारे क्रिकेट प्रेम की दीवानगी के प्रमाण' काफी पसन्द आया। दीवाना अपने दीवाने पाठकों को बेकरारी के साथ इन्तजार करवाता है यह बात जरा मन में खटकती है! मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि दीवाना इसी प्रकार दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करता रहे। अगले अंक की प्रतीक्षा में चिल्ली का दीवाना। **अशोक लाल—नई दिल्ली**

दीवाना अंक ३६ प्राप्त हुआ मुख पृष्ठ की देख कर अपनी हंसी न रोक सके। मोटू पतलू की आखिरी चाल रोचक लगी, सिद्धार्थ और विशेषकर राजनीतिक नेता और दीवानी फिल्म स्टोरियां पसंद लगीं, आशा है आगामी अंक भी रोचक होगा।

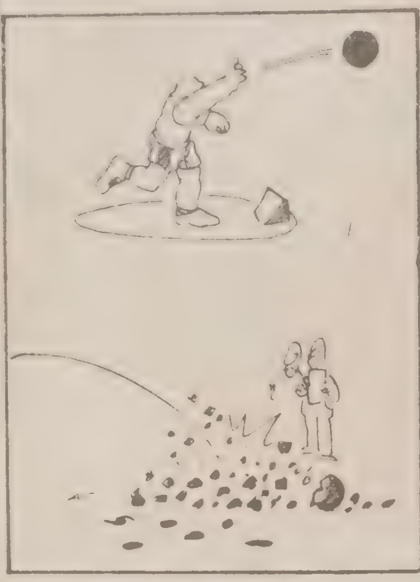
सतीश एबट—लुधियाना

दीवाना का अंक ३६ बहुत ही रोचक लगा! बुक स्टालों के चक्कर पे चक्कर लगाने पर इस अंक के दर्शन हुए। वैसे तो दीवाना का हर अंक एक से बढ़कर एक होता! चिल्ली लीला, परोपकारी, आखिरी चाल, मदहोश, अच्छे लगे। बदलती चुड़ियां, पचतंत्र बहुत ही अच्छी लगी। आशा है अगला अंक भी रोचक होगा!

सजाज अख्तर—भवानी पुर

'दीवाना' को अंक ३६ पावा। चिल्ली कसम पूरे सोलह आना भर मजा पायेन।' पचतंत्र' तो बहुतै नीक लाग। मोटू-पतलू और पिलपिल-सिलबिल, सबै जन आपन-आपन अजब रंग जमाइन।

कबिनन का तनि अउर जादा देउ तौ किरपा होई। वैसे हम 'दीवाना' के परिवार के सबै जनेन का नए बरस पर दुई-दुई लीटर शुभकामना भेज रहे हन सवीकार करेउ। **कमल श्रीवास्तव—लखनऊ**



'दीवाना' मेरी सबसे प्रिय पत्रिका है। दीवाना के सभी स्तम्भ मुझे अच्छे लगते हैं। कृपया संगीतकार आर० डी० बर्मन पर कोई लेख लिखें। अंक ४० मुझे कल ही प्राप्त हुआ। हर बार की तरह इस बार भी 'पंचतंत्र' और 'मदहोश' काफी मजेदार थे। फिल्म 'मुकद्दर का सिकन्दर' की फिल्म पैरोडी भी मजेदार थी। किन्तु उस पैरोडी में एक गलती को देख कर मन निराश हुआ। 'मुकद्दर का सिकन्दर' के संगीतकार लक्ष्मी कंद प्यारेलाल (लक्ष्मीकांत प्यारेलाल) नहीं बल्कि कल्याणजी-आनन्दजी हैं। कृपया ऐसी गलती न होने दें। उम्मीद है अगली बार से आप अपने प्रिय पाठकों को निराश नहीं करेंगे। **चन्द्रशेखर—जमशेदपुर**

अपनी प्रिय पत्रिका 'दीवाना' का नया और ताजा अंक ४१ मिला, देखते ही लपक लिया। इस रोचक अंक में पढ़ने को मिला – चिल्लीलीला, परोपकारी, सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू, बच्चा झमूरा, फैण्टम, मदहोश आदि के रोमांचक एवं मनोरंजक कारनामे, मेरी ओर से इस अंक के सभी चमकते सितारों को मुबारकबाद दें।

श्याम एस० महेश्वरी—फारबिसगंज

दीवाना अंक ४२ प्राप्त हुआ, नया साल आते देख काफी प्रसन्नता हुई, परन्तु जब नये साल के लिए कोई शिक्षाप्रद बात 'दीवाना' में नजर नहीं आई तो कुछ निराशा सी हुई। दीवाना' में 'हाकी कम खेल' इत्यादि समाप्त कर 'बाल लेखकों' की कहानियां प्रकाशित करें तो बेहतर होगा, इससे कई पाठकों के मन में अपने अन्दर की 'अजीबो-गरीब' बातें लिखने का अवसर प्राप्त होगा, जो वे सोचते हैं। 'दीवाना' कुछ पृष्ठों को छोड़कर रंगीन नहीं होता, सब काला-काला नजर आता है, कृपया रंगीन करने की कोशिश करें, बेशक आप 'सवा रुपया' का दीवाना कर दें। **कमल—दिल्ली**

दीवाना अंक ४२ मिला मगर आजकल के अंक लेट आ रहे हैं। मुख पृष्ठ काफी अच्छा था। चिल्ली लीला भी अच्छा रहा। पिलपिल सिलबिल भी अच्छा रहा। बेचारे घसीटाराम की बहुत मरम्मत हुई। सुबह का तारा भाग—३ अच्छा रहा और बाकी सभी फीचर काबिल-ए-तारीफ थे। हमें आशा है अगला अंक भी रोचक होगा व समय पर मिलेगा।

जुबैर अहमद—नई दिल्ली

मैं काफी अरसे से आपकी पत्रिका दीवाना साप्ताहिक पढ़ता आ रहा हूं। मुझे बहुत अच्छी लगती है निःसन्देह आपकी पत्रिका में प्रकाशित सामग्री बड़ी ही रोचक रहती है एवं मनोरंजन प्रदान करने के लिए वरदान तुल्य है। सफल सम्पादन के लिये बधाई स्वीकारें!

आपकी पत्रिका दीवाना दिनों दिन तरक्की करे यही हमारी शुभकामनायें हैं।

दयानन्द बाबा—रायपुर (म० प्र०)

अंक ४१ के मुखपृष्ठ को देखते ही 'दीवाना' के लेट मिलने का कारण समझ में आ गया। दरअसल हुआ यह होगा कि चिल्ली और आपको हमारे यहाँ आने में आलस्य आ गया होगा। लेकिन इतने बूढ़े रूप में मिलने के बावजूद 'दीवाना' पर हमारा प्रेम बरकरार रहा।

हमारे क्रिकेट प्रेम की दीवानगी के प्रमाण, कुछ आने वाली फिल्मों पर अटकलबाजी, परोपकारी, सिलबिल-पिलपिल, सवाल यह है? एक कदम आगे ही थे। कामना करता हूं कि 'दीवाना' इसी प्रकार हमें तन्दरुस्त करता रहे।

पवन खत्री 'बैरागी'—इन्दौर

मोटू पतलू

आजकल डाक्टर झटका ने प्लास्टिक सर्जरी से आदमी की शक्लें बदलने का क्लीनिक खोला हुआ है। पिछले दिनों फ्लाईंग डिटैक्टिव बनने के चक्कर में घसीटाराम की नाक कट गई थी और उसका जिस्म टूट फूट गया था। उसके जिस्म की मरम्मत कराने के लिए उसे डाक्टर झटका के पास ले जाया गया तो वहाँ मूंछ बहादुर सिंह नाम का एक हत्यारा डाकू भी पुलिस के डर मे अपनी शक्ल बदलवाने के लिए पहुंच गया।

डाक्टर झटका की आंखें तो पहले से ही संतरे की फाँके हैं। उसे कम्पाउंडर मिला है, सो आँख का अंधा और नाम नैनसुख। इन दोनों ने प्लास्टिक सर्जरी शुरू की तो कमाल यह किया कि घसीटाराम की नाक, मूंछ और उसके बाल डाकू के लगा दिये और घसीटा राम के कपड़े भी उसे पहना कर पूरा घसीटा राम बना दिया। और असली घसीटाराम की सर्जरी की तो डाकू की मूंछें और उसके बाल उसके चेहरे पर लगाकर उसे डाकू मूंछ बहादुर सिंह के कपड़े भी पहना दिये।

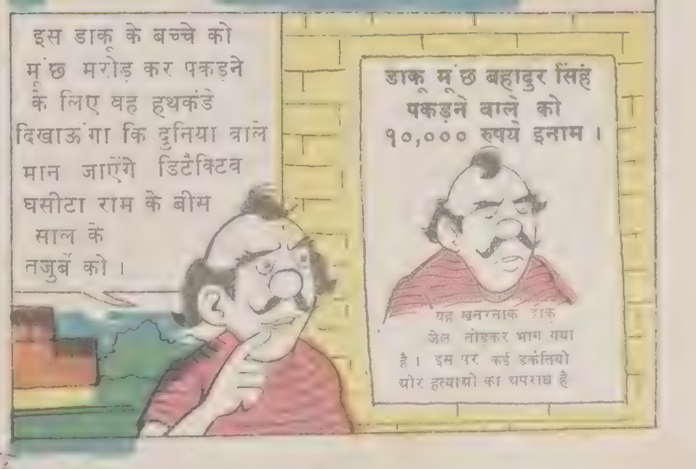
डाकू मूंछ बहादुर सिंह तो यह चाहता ही था कि पुलिस की नजरों से बचने के लिए वह अपना हुलिया बदल ले। एक मंदिर से चुराया चालीस लाख रुपये का हीरा उसने घसीटा राम के मित्र भाई छछून्दर के थैले में डाल दिया था। वह समझता था किसी भी समय शक होने पर पुलिस उसकी तलाशी ले सकती है। हीरा उसके पास से निकला तो वह पकड़ा जाएगा। पर छछून्दर के थैले पर कोई भूलकर भी शक नहीं करेगा।

दूसरी ओर घसीटाराम भी खुश है। उसे इस बात का जरा भी शक नहीं कि डा० झटका ने उसे क्या से क्या बना दिया है। पुलिस ने उसे डाकू समझ कर पकड़ना चाहा था पर वह उसके चंगुल से निकलकर भाग गया है। इस समय डाकू मूंछ बहादुर सिंह घसीटा राम बनकर मोटू-पतलू के घर पहुंचा हुआ है। उसका पचास लाख का हीरा भाई छछून्दर के थैले में है। और प्लास्टिक सर्जरी से डाकू सा लगने वाला असली घसीटाराम अपने घर की ओर जा रहा है।










पर मैं इस पोस्टर को दीवार पर से उतार लूं। मोटू-पतलू या उस बूढ़े चेलाराम ने देख लिया तो इस केस में भी वे अपनी टांग फँसा देंगे।
किसी से भी मिलने से पहले मैं अपने घर एकान्त में बैठक
इस डाकू की मूंछ को उसकी पूंछ से बांधने की योजना
बनाऊंगा
यह क···क···क्या देख रहा हूं मैं।
ड···ड़···डाकू मूंछ सिंह। बचाओ, बचाओ, पकड़ो, पकड़ो।
क्या कहा ? डाकू मूंछ बहादुर उधर गया है ?
हां। मैंने अपनी आंखों से देखा है।
दूसरी ओर मोटू-पतलू के घर में और ही चक्कर चल रहा था।
इस बन्दर जैसे आदमी ने थैला यहां लटका दिया है। इन बेवकूफों में से किसी को पता नहीं है कि इसमें हीरा है। मुझे उस पर कड़ी नजर रखनी होगी। और आगे की कोई योजना बनाने से पहले यहीं डेरा जमाये रखना पड़ेगा।



घसीटा राम पतला दुबला था। यह इतना मोटा कैसे हो गया है ?
डाक्टर झटका के यहाँ माल खा कर सेहत बनाई है मेरे शेर के बच्चे ने।
इसकी नाक टेढ़ी कैसे हो गई है।
क्या उल्लुओं की सी बातें कर रहे हो। डाक्टर झटकाने प्लास्टिक सर्जरी करके इसकी कटी नाक ठीक की है। जैसी यह नाक टेढ़ी हो गई है, ऐसे तो किसी मोची से फटी जूती सिलवाओ तो वह भी टेढ़ी रह जाती है।
बालिश्त भर का जानवर सरदार का मजाक उड़ा रहा है। तेरे पेट में खंजर भोंककर अंतड़ियाँ बाहर कर दूंगा।
सरदार! यह झल्ली वाला अपने को सरदार कैसे कह रहा है।
इतना गुस्से में पहले तो कभी नहीं देखा घसीटा राम को। जो सब्जी काटने के टूटे चाकू से डरता हो वह खंजर की बात कर रहा है।
मैं फिर कह रहा हूं, अपने जामे में रहो, नहीं तो टांग पर टांग रखकर चीर दूंगा।
घसीटा राम कुछ बदला हुआ सा लग रहा है। इसके मुंह के पास जाकर देखना चाहिए।
यह विचार आते ही अंगूठा नन्द चेलाराम की जेब से निकल पड़ा।
चलो गुस्सा थूको, और यह बताओ कि फ्लाईंग डिटैक्टिव का तजुर्बा कैसा रहा ?
फ्लाईंग डिटैक्टिव ? फ्लाइंग स्क्वैड ?? मतलब क्या है ? तुम फ्लाईंग स्क्वैड के आदमी हो ??
वह तो तुम जानते ही हो कि मैं बहुत पहले से हूं। पुलिस से मेरा सीधा सम्पर्क है।
पुलिस से सीधा सम्पर्क है ?



तुम अपने नये तजुर्बे की बात बताओ।
नया तजुर्बा ? नये डाके का तजुर्बा ? क्या फ्लाईंग स्क्वैड के इस अधिकारी ने मुझे पहचान लिया है ?
नहीं, मुझे कोई तजुर्बा नहीं है।
दुनिया का कोई काम ऐसा नहीं जिसमें इसे बीस साल का तजुर्बा न हो। यह कैसा घसीटाराम है जो कह रहा है कि मुझे कोई तजुर्बा नहीं है। पहले दर्जे का उल्लू सा लग रहा है।
कोई भी ऐसा नहीं जिसने मुझे मन्दिर के पास भी देखा ? मुझे क्या पता गोली चली या नहीं। वह मन्दिर का पुजारी तो खुद ही मर कर गिर गया था।
इसे कोई तजुर्बा नहीं। यह मन्दिर नहीं गया। मन्दिर का पुजारी खुद ही मर कर गिर गया। यह बक क्या रहा है ? घसीटा राम का दिमाग तो खराब नहीं हो गया है।
अंगूठा नन्द का पांव फिसला था, तो वह सीधा थैले के अन्दर जा पड़ा था। वहाँ उसने बड़ा हीरा देखा तो वह चौंक गया। उसने आज तक हीरा नहीं देखा था। बहुत सोचने पर भी वह यह नहीं समझ पाया कि यह क्या है।
चेला राम से यह पूछने के लिए कि यह क्या है, वह हीरे को अपनी कमर पर उठाकर थैले से बाहर आ गया।
पर हीरे का बोझ अधिक देर तक सम्भाले रखना अंगूठा नन्द के बस का रोग नहीं था, हीरा उसकी कमर से फिसल गया।
और सीधा नकली घसीटा राम की जेब में जा पड़ा। अब अंगूठानन्द ने भी नीचे छलांग लगाई।


ग्रौर फुदकता हुग्रा चेला राम की जेब में जा बैठा। अंगूठा नन्द के लिए यह खास बात नहीं थी। उसकी समझ में नहीं ग्रा रहा था कि उसने क्या से क्या कर दिया है। तभी नकली घसीटा राम को याद ग्राया कि उसे देख लेना चाहिए कि उसका कीमती हीरा थैले में है, या नही।
जैसे ही उसने थैले में हाथ डाला। उसकी ग्राँखें फटी की फटी रह गईं। हीरा वहाँ से गायब था।
हीरा यहां नहीं है ! थैला बिल्कुल खाली है।
मैं लुट गया।
मैं बैंगन का भुर्ता बना दूंगा एक एक का। मैं इन्हें जिन्दा गाड़ दूंगा धरती में।
बताग्रो, तुमने हाथ दिया था इस थैले में ? तुमने इसमें से निकाला है कुछ ?
'क्या निकाला है ? किसकी बात कर रहे हो ?'
बनने की कोशिश मत करो। तुम ग्रच्छी तरह जानते हो क्या निकाला है।
ग्रपनी जेबों की तलाशी दो। कोई गड़बड़ की तो गला घोंट दूंगा।
इस जेब में तो कुछ नहीं है। ग्रौर इसमें यह मेंढ़क-सा पड़ा है।
हीरा तो मिला नहीं पर चेला राम की जेब में से अंगूठा नन्द उसके हाथ में ग्रा गया।
यह बालिश्तिया पाल रखा है ग्रपनी जेब में।


गोली मारो, इसके। तुम ग्रपनी तलाशी दो। तुमने इस थैले में से कुछ उड़ाया है ?
मेरा थैला है। इसमें से मैं कुछ उड़ाऊंगा। ग्ररे ग्रो घसीटा राम, तेरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है ?
अंगूठा नन्द मेज पर जाकर पड़ा तो वह बेहोश हो गया था ग्रौर ग्रब इस राज को बताने वाला कोई नहीं था कि हीरा कहां गया ?
दिमाग तेरा खराब है हनुमान की दुम। ग्रगर पेट में भी छुपाया है तो हाथ देकर निकाल लूंगा।
इस हनुमान को जेब में से भी नहीं मिला तुम सब ग्रपने कपड़े उतार दो, नहीं तो एक-एक का कीमा बना दूंगा।
ढूंढ़ क्या रहा है घसीटा राम ? कहीं इसका दिमाग तो खराब नहीं हो गया है ?
सारी उम्र हमने तेरी चटनी पीसी है। तू कीमां कैसे बनाएगा हमारा ?
ऐसे बनाऊंगा।
ग्राह
इतनी हार्स पावर कहां से ग्रा गई घसीटा राम में ?
मेरे बत्तीस के बत्तीस दांत मोरार जी देसाई के मंत्रिमंडल की तरह हिल गये हैं।
कोई कसर रह गई है तो बता दो।
ग्रब किसी में भी विरोध करने की हिम्मत नहीं थी। देखते ही देखते कपड़े उतरवा कर सबको नंगा कर दिया गया था। कमरे का सामान उलट पलट कर हर जगह तलाशी ली गई थी। पर घसीटा राम बने मूंछ बहादुर सिंह को कहीं हीरा नहीं मिला था उसे हर जगह शक था। उसने हर जगह हीरा ढूंढ़ा था। पर ग्रपनी जेब की तलाशी लेने का ख्याल उसे सपने में भी नहीं ग्रा सकता था।
ग्रब ग्रास्तीनें चढ़ा कर एक-एक की कटाई करूंगा। कोई भी इस कमरे से बाहर नहीं गया है। मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूं कि वह इस कमरे में ही है।


क्या ढूंढ रहे हो ? क्या खो गया है तुम्हारा ? कुछ बताओ तो सही ।
तभी चेला राम की कलाई पर बंधे घड़ी जैसे ट्रांजिस्टर ने सिगनल शुरू कर दिये ।
बिप.....बिप.....बिप
हैल्लो ! मैं डिटैक्टिव चेलाराम बोल रहा हूं ।
बिप बिप हैलो हैलो !
डाकू मूंछ बहादुर सिंह जेल तोड़ कर भाग गया है । उसके बारे में तुम से कुछ प्लैनिंग करनी है ।
मैं इन्स्पैक्टर कुमार बोल रहा हूं पुलिस हैडक्वार्टर से ।
बिप बिप... मैं चेला राम बोल रहा हूं
मैंने डाकू मूंछ बहादुर सिंह की फोटो देखी है आज के समाचार पत्र में । इस केस के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए मैं पुलिस स्टेशन आना चाहता हूं । पर यहां घसीटा राम पर पता नहीं क्या दौरा पड़ा है । उसने सबकी नाक में दम कर रखा है ।
कोई बात नहीं, मैं वहीं तुम्हारी ओर आ रहा हूं ।
मतलब पुलिस इन्स्पैक्टर यहां आ रहा है ।
हमें घसीटा राम के पड़ौसियों की ओर से रिपोर्ट मिली है कि उसने अपने घर के तमाम दरवाजे और खिड़कियां अन्दर से बन्द कर रखी हैं । एक खिड़की में से किसी पड़ौसी ने झांक कर देखा, तो उसका कहना है कि उसने वहां मूंछ बहादुर को देखा है ।
घसीटा राम! अपनी खिड़कियां अन्दर से बन्द कर रखी हैं ? वहां डाकू मूंछ बहादुर को देखा है ? पर घसीटा राम तो जाने कब से यहां है ।
यह नहीं हो सकता । घसीटा राम एक ही समय पर दो जगह नहीं हो सकता । अपने घर भी और तुम्हारे घर भी ।


केस और भी उलझ गया है। मैं अभी तुम्हारे पास आ रहा हूं।
मूंछ बहादुर सिंह
ड़ने वाले को
०० रुपये इनाम।
दूसरी ओर प्लास्टिक सर्जरी से शक्ल बदला असली घसीटा राम अब मोटू-पतलू और चेलाराम की ओर आ रहा था।
जरा चल कर देख, मोटू पतलू क्या कर रहे हैं।
डाकू मूंछ बहादुर सिंह को पकड़ने की कोई तरकीब मेरी समझ में तो आई नहीं। अगर मोटू पतलू ने कोई तरकीब सोची होगी, तो उसे मैं ले उड़ूंगा। दूसरों का तजुर्बा ले उड़ने का तो मुझे बीस साल का तजुर्बा है।
घसीटाराम जब मोटू पतलू के घर की खिड़की के पास पहुंचा तो.........
पता नहीं यह कैसी कढ़ी पका रहे हैं चुपके ही चुपके।
?
अरे मर गया। यह मैं क्या देख रहा हूं खिड़की से बाहर।
ऐ—! शोर न मचाना। मुझे चुपके से बता दो, तुम डाकू मूंछ बहादुर सिंह को पकड़ने के लिए क्या योजना बना रहे हो?
डाकू मूंछ बहादुर सिंह को पकड़ने के लिए? यह तुम क्या कह रहे हो?
आहिस्ता बोलो, और मेरी मानो तो इस कारनामे में मुझसे साझेदारी कर लो। तुम्हें वह लाभ होगा जो बीस साल के तजुर्बे में कभी न हुआ हो।
बीस साल के तजुर्बे में?

खेल खेल में

संजीव कुमार आजोविया—हैदराबाद

प्र० : बिलियर्ड का जन्म कहाँ हुआ ? तथा इस वक्त संसार में कौन इसका सबसे अच्छा खिलाड़ी है ?

उ० : यह निश्चित रूप से कोई नहीं कह सकता कि बिलियर्ड का जन्म कहां और किसने किया। बिलियर्ड - शब्द का जन्म नार्मन फ्रेंच शब्द बिलार्ट से हुआ। बिलार्ट का अर्थ खेलने का छड़ है। ऐसा माना जाता है पहले-पहले इंगलैंड और फ्रांस ने इसे सन् १३०० ईस्वी के आसपास खेलना शुरु किया। चार्ल्स कॉटन जिन्होंने १६७४ में 'दि कम्पलीट गेमस्टर' नामक पुस्तक लिखी इस खेल के पहले इतिहास लेखक थे। लेकिन उससे पहले शेक्सपियर तथा स्पेंसर की रचनाओं में बिलियर्ड का जिक्र आता है। प्रथम बिलियर्ड टेबल की स्वामिनी मेरीक्वीन ऑफ स्कॉटस को माना जाता है जब १५७६ में उससे यह टेबल छिन गया तो वह बहुत रोई थी। १८ वीं सदी में पहला बिलियर्ड रूम अब्राहम कार्टर ने लन्दन के पियाजा कोवेन्ट गार्डन में खोला और चलाया। इसी सदी के शुरू में दाव लगाने वाले जुआरियों को इस खेल ने आकर्षित किया। उस समय के बड़े-बड़े जुआरी बिलियर्ड के खेलों पर दाव लगाने लगे। १८५५ में बिलियर्ड मैचों के परिणाम व वर्णन समाचार पत्रों में छपने लगे। उस समय दो प्रसिद्ध खिलाड़ी जोनाथन और जैककार दोनों स्वयं को बिलियर्ड चैम्पियन घोषित करने लगे। दोनों में इसका फैसला होने के लिये मैच होना था लेकिन कार मैच के पहले दिन मर गया और जोनाथन चैम्पियन घोषित किया गया। इस वक्त संसार में भारत के माइकेले फरेरा सर्वश्रेष्ठ बिलियर्ड खिलाड़ी हैं।

रोशन व्यास त्यागी—इन्दौर

प्र० : विभिन्न खेलों में कौन सा खिलाड़ी विश्व में सबसे ज्यादा लोकप्रिय है ?

उ० : शायद मुक्केबाज मुहम्मद अली के बराबर लोकप्रिय, चर्चित तथा विवदास्पद व्यक्ति खेल जगत में और कोई नहीं है।

अनूपकुमार त्रिपाठी—नान्द्रा, म० प्र०

प्र० : हॉकी के खेल में 'इन्टर सेप' शब्द का क्या अर्थ होता है ?

उ० : इन्टरसेप का अर्थ है रोकना। किसी को बढ़ने से रोकना। जब विपक्षी दल का खिलाड़ी बॉल लेकर आ रहा हो तो उसे जो खिलाड़ी रोकेगा उससे वह गेंद छीनने की कोशिश करेगा उसे हम इन्टरसेप्ट करना कहते हैं। युद्ध में शत्रु देश के जहाज बम फेंकने हमारे देश की सीमा में घुस आते हैं, उन्हें रोकने और मार गिराने के लिए हमारे जो जहाज जाते हैं उन्हें इन्टरसेप्टर कहते हैं। वे भी इन्टरसेप्ट करने का कार्य करते हैं।

बन्टा मदान 'खिलाड़ी'—सिवहारा

प्र० : एक वर्ष में १००० रन बनाने वाला पहला खिलाड़ी ?

उ० : क्लेम हिल (आस्ट्रेलिया) १०६० रन।

प्र० : ९९ पर आउट होने वाला पहला खिलाड़ी ?

उ० : क्लेम हिल (आस्ट्रेलिया) (१९०१—२)

प्र० : पहला टैस्ट शतक ?

उ० : बैनर मैन, १६५ रन (आस्ट्रे० १८६६ में)



प्र० : पहला खिलाड़ी शुरू से अन्त तक ?

उ० : मुर्डोच १५३ रन १८८० में (आस्ट्रे०) विरुद्ध इंग्लैंड।

प्र० : बेदी का सर्व प्रथम नेतृत्व ?

उ० : बेदी ने सर्वप्रथम न्यूजीलैंड के विरुद्ध अपनी टीम का नेतृत्व किया।

प्र० : पहला दोहरा टैस्ट शतक ?

उ० : मुर्डोच, २११ रन (आस्ट्रे०) १८८० में।

पेप—लखनऊ-१

प्र० : हॉकी के खिलाड़ी श्री 'असलम शेर खां' किस जगह से खेलते हैं और अपनी जगह से कैसा खेलते हैं ?

उ० : असलम शेरखां इण्डियन एयर लाइन्स में सेवारत हैं। अत: एयरलाइस की टीम की ओर से ही खेलते हैं। इंडियन एयर लाइंस की हाकी टीम हमारे देश के प्रमुख हाकी दलों में से है। यह भारत की सभी प्रमुख हाकी टूर्नामेंटों में भाग लेती है।

चन्द्रशेखर गोस्वामी—हरिद्वार

प्र० : इयान चेपल का सर्वाधिक स्कोर कितना है व कितने शतक बनाए ?

उ० : ईयान चैपल का सर्वाधिक स्कोर १९६ रन है, उन्होंने १४ शतक मारे थे।

इमरान हैदर दुर्रानी—वर्धा

प्र० : पाकिस्तान के तेज गेंदबाज इमरान खां और सरफराज नवाज में कौन प्रथम है और टेस्ट रिकार्ड तथा दोनों की रफ्तार बताइये ?

उ० : इमरानखां सरफराज से तेज हैं। लेकिन सरफराज गेंदों को स्विंग कराने में माहिर हैं। इसलिये प्राय: टैस्टों में वे इमरान से ज्यादा विकटें मार जाते हैं। इमरान काफी तेज गेंदबाजी करते हैं। विभिन्न तेज गेंदबाजों की वास्तविक गति नापने के लिये एक बहुत महंगा इलैक्ट्रॉनिक यंत्र प्रयोग में लाया जाता है। इस बार गति मापने के लिए विश्व के पांच तेज गेंदबाजों को आमंत्रित किया गया है। इमरान भी उनमें से एक हैं।

सरदार हरभजनसिंह—धामपुर

प्र० : विश्व में क्रिकेट के खिलाड़ियों में सबसे अधिक पैसा किस खिलाड़ी ने कमाया है ?

उ० : यही जानने के लिए इन्कम टैक्स वाले भी बेताब हैं। इतना हम जरूर कह सकते हैं कि पहले की अपेक्षा इन तीन चार वर्षों से क्रिकेटर अच्छा पैसा कमा रहे हैं।

खेल-खेल में
दीवाना
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

हाकी कैसे खेलें

खेल की बाधायें फाउल्स और नियम

हाकी के प्रत्येक खिलाड़ी को हाकी खेलने के सभी नियमों की पूरी तरह जानकारी होनी चाहिए। नियमों की जानकारी के लिये कोई भी हाकी से सम्बन्धित अच्छी पुस्तक का अध्ययन करना प्रत्येक अच्छे खिलाड़ी का कर्तव्य होना चाहिए। खेल के नियमों का उद्देश्य मुख्य रूप से यह होता है कि मर्यादा भंग न हो और सुव्यवस्थित रूप से खेला जाता रहे। साथ ही किसी भी गलत ढंग से खिलाड़ी को शारीरिक चोट अथवा अन्य किसी प्रकार के नुकसानदायक आघात को न झेलना पड़े।

खेल की मर्यादा को बनाये रखने के लिये कुछ ऐसे नियम बनाये गये हैं जिन्हें लागू करने से खेल की मर्यादा बनी रहती है। गलत ढंग से खेलने पर कुछ दंड देने के लिये भी नियम बनाये गये हैं तथा कुछ नियम साधारण भी हैं। गलत ढंग से स्टिक का उपयोग करना, गेंद को जान-बूझ कर खेल की निश्चित सीमा से बाहर कर देना, किसी खिलाड़ी को जान-बूझकर धक्का दे देना, गलत ढंग से स्टिक से गेंद को रोकना या इसी तरह की अन्य आपत्तिजनक बातों के लिये कुछ साधारण व कड़े नियम बनाये गये हैं। खेल में जो इस तरह की बाधायें आती हैं उन्हें किसी तरीके से दूर कर खेल को पुनः चालू किया जाता है, इसका हम नीचे विवरण दे रहे हैं।

बाधा (आब्स्ट्रक्शन)

किसी भी खिलाड़ी द्वारा खेल सामान्य स्थिति के विपरीत कोई भी ऐसी हरकत करना या स्टिक द्वारा अथवा शरीर के किसी अंग द्वारा विपक्षी खिलाड़ी के आगे नियम के प्रतिकूल बाधा उत्पन्न करना ही 'ऑब्स्ट्रक्शन' कहलाता है।

जब एम्पायर यह देखता है, कि नियम के प्रतिकूल किसी खिलाड़ी द्वारा ऐसी आपत्तिजनक स्थिति उत्पन्न की गई है तो वह खेल को सीटी बजाकर वहीं रोक देता है और जिस प्रकार की बाधा उत्पन्न की गई उसी के अनुकूल खिलाड़ी को दंड देता है।

जिन परिस्थितियों में ऑब्स्ट्रक्शन का दंड दिया जाता है, वे इस प्रकार हैं—

१. जब एक खिलाड़ी ड्रिब्लिंग करता हुआ गेंद को अपने बाईं ओर ले आये और विरोधी खिलाड़ी गेंद को रोकने की कोशिश में खुद को गेंद और खिलाड़ी के बीच में ले आये।

२. जब कोई खिलाड़ी अपने गोल क्षेत्र के अन्दर विपक्षी खिलाड़ी जो कि गोल करने के लिये वहां पहुंच चुका है—उसके व गेंद के बीच में अपने आपको ले आये।

३. जब कोई लफ्ट विंगर को तिरछी हिट मारते हुए अपने शरीर को अपने विरोधी खिलाड़ी की ओर इस प्रकार से ले आये कि विरोधी खिलाड़ी गेंद छीनने के लिये उससे टेकलिंग न कर सके।



आब्स्ट्रक्शन के दो रूप

४. जब कोई फारवर्ड खिलाड़ी गेंद को लेकर आगे बढ़ते समय विपक्षी खिलाड़ी की भिड़न्त से बचने के लिए उसको स्टिक से गिरा दे या ठेल दे।

५. जब गोलीकीपर घुटनों के बल जमीन पर गेंद को अपने नीचे ढंकता हुआ बैठ जाये या अन्य किसी तरीके से विरोधी खिलाड़ी को गेंद खेलने से रोके।

६. जब कोई खिलाड़ी अपनी स्टिक, विरोधी खिलाड़ी की स्टिक और गेंद के बीच में अड़ा दे।

इसी तरह की अन्य आपत्तिजनक बातों को रोकने तथा खेल को पुनः सुव्यवस्थित रूप में चलाने के लिये कुछ दंडस्वरूप नियम को बनाया गया है। ऊपर लिखित किसी भी प्रकार की बाधाओं के उपस्थित होने पर बाधा उपस्थित करने वाले खिलाड़ी को बाधा के स्वरूप के अनुसार ही दंडित किया जाता है।

उन दंडों को निम्न नामों द्वारा जाना जाता है—

१. कैरिड, २. स्टिक, ३. फ्री हिट, ४. ऑफ-साइड, ५. पुश-इन, ६. हुक, ७. अंडर कट, ८. बैक स्टिक, ९. गोल इन, १०. लैफ्ट चेकिंग।

कैरिड

हाकी खेलते समय गेंद अगर खिलाड़ी के शरीर के किसी भी अंग से छू जाती है तो कैरिड नामक फाउल कहलाता है। जान बूझकर गेंद से हाथ रोक लेना या उठा लेना या गेंद को शरीर के किसी भी अंग द्वारा रोक लेना 'कैरिड फाउल' कहलाता है।

हाथ से या पैर से गेंद रोकने का अधिकार केवल गोलकीपर को ही दिया जाता है। गोलकीपर चाहे तो शरीर के किसी भी अंग द्वारा गेंद को रोक सकता है। लेकिन यह सब भी वह तभी कर सकता है जबकि वह गोल क्षेत्र में हो।

जब कोई खिलाड़ी कैरिड नामक फाउल करता है तो एम्पायर खेल रोककर उसी स्थान पर बुली कराकर खेल फिर से शुरू कराता है। दूसरी स्थिति में यदि गोल क्षेत्र के पास गेंद पहुंच जाय और प्रतिरक्षक खिलाड़ी गोल होने के भय से जान बूझकर यदि गेंद को अपने शरीर से रोकता है तो अम्पायर 'पेनल्टी स्ट्रोक' नामक दंड दे सकता है।

स्टिक

जब कोई खिलाड़ी कोई स्ट्रोक मारने से पहले अथवा मारने के बाद हाकी को कंधे से ऊपर उठाता है। तो वह 'स्टिक' फाउल कहलाता है। यदि उछलती हुई गेंद आये तो खिलाड़ी उसे हथेली से रोककर जमीन पर लम्ब रूप में गिराकर हिट कर सकता है। किन्तु ऐसा करते समय गेंद हथेली पर ठहरनी चाहिए।

(क्रमशः)


फैण्टम
और तीन लुटेरे
जैसे ही हत्यारों वाली बड़ी नाव रस्सियों से बने पुल के नीचे पहुंचती है···
सीधे ऊपर गिरना !
कड़क कड़क
ईईई !
यह क्या हुआ ?
वही···नकाब-पोश !
बड़ी नाव पर एक और नया यात्री···
एक तो बोहोश हो गया अब बाकि दो की खबर लेनी है !
आखिर तुम कौन हो भई···
अरे भई···यही तो फंटम है !
छूऊऊ ! छूऊऊ !
ड्यूड इसको ठिकाने लगा दो !
!
आ आ आ हाय मैं मरा !
छू ! छू !
ZING! ZING!
मैक···क्या करने जा रहे हो तुम ?
यही एक रास्ता है यहां से भागने का !
टक्कर
तुम तो वास्तव में जा रहे हो !?
हां···अगर थोड़ी बहुत भी समझ बाकी है तो मेरे पीछे भाग लो !
मैं तो पूरा होश में हूं, तुम्हारे पीछे आ रहा हूं !
वे इस तरह भाग कर ज्यादा दूर नहीं जा सकते ।
यह कौन हो सकता है ?
मैं इसको जानना हूं, इससे पहले मैंने इसको दूल्हे के रूप में देखा था···!



हमको बाकि दोनों ने मृत कहकर पुकारा था और इनकी योजना हमको जान से मारने की थी ।
हां, कर्नल वीकम ये लोग तुम्हें जान से मार देते क्योंकि इससे पहले ये कई कत्ल कर चुके है ।
तुम मुझे जानते हो ?
जंगल पेट्रोल का भूतपूर्व कर्नल वीकस, और आजकल अवकाश ग्रहण किया हुआ है ।
नकाबपोश··· अ···क्या मैंने··· तुम्हें कभी हिरासत में तो नहीं लिया ?
कभी नहीं···
फैण्टम···जंगल पेट्रोल का गुप्त कमांडर ।
बड़ी नाव में···
श्रीमान हम आपके आभारी हैं आपने हमारी जान बचाई··· अगर तुम··· डाकू हो तो यहाँ से जल्दी चुप चाप भाग जाओ, हम तुम्हारी रिपोर्ट पुलिस में नहीं करेगें ।
कर्नल वीकस यह डाकू नहीं है, मै इसी की शादी पर तो गया था !
यह सब कुछ··· अजीब सा··· मेरा मतलब है । मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूं ।
जितना तुम्हें पता है उससे ज्यादा नहीं समझ सकते कर्नल वीकम ।
हम कहां जा रहे हैं, ओह, ओह, मैक ?
उस नकाबपोश से जितना दूर से दूर जा सकें !
क्रमशः

क्यों और कैसे

प्र० : मकड़ी अपने जाल में स्वयं क्यों नहीं फंसती ? तनवीर अहमद—सहारनपुर

उ० : क्या मेरे घर में नही आओगी ? मकड़ी मक्खी से बोली—चतुर मकड़ी जानती थी कि मक्खी जाले में आते ही फंस जायेगी तथा उसके लिये स्वादिष्ट भोजन बन जायेगा। परन्तु यदि जाला मक्खी के चिपक जाता है, तो क्या कारण है मकड़ी के शरीर पर जाला नहीं चिपकता। कारण है मकड़ी अपने घर से परिचित है और उसे मालूम होता है कि उसके जाले में कौन सी राह कैसी है। जाला बनाते समय ही मकड़ी ने इस बात का ध्यान रक्खा था कि जाले में सुरक्षित धागे भी हों, जिनका प्रयोग मकड़ी जाले में स्वयं आने जाने में करेगी। ये धागे छूने पर शरीर से चिपकते नहीं हैं।

मकड़ी अपना जाला कई प्रकार के धागों से बनाती है। एक धागे चिपकाने वाले होते हैं जिन की सहायता से मकड़ी अपना शिकार फंसाती है जाले का आधार बनाने के लिये मकड़ी मजबूत बिना चिपकने वाले धागे बनाती है। मकड़ी अपने जाले के इनबिना चिपकाने वाले धागों से बिल्कुल परिचित होती है और स्वयं जाले में घूमने के लिये इन ही धागों का प्रयोग करती है। मकड़ी बड़ी सावधानी से चिपकाने वाले धागों से बच कर जाले में घूमती है। मकड़ी ऐसा करने में इसलिए सफल हो जाती है क्योंकि इसके अन्दर एक अद्भुत स्पर्श शक्ति होती है।

प्र० : बरमूदा त्रिकोण क्या है, इसका रहस्य क्या अभी तक रहस्य ही है ?

कृष्ण कुमार मल—हावड़ा, कलकत्ता

उ० : पश्चिमी एटलांटिक के एक भाग जो कि अमरीका के उत्तर पूर्वीय तट के पास है, को बरमूदा त्रिकोण कहा जाता है। ये त्रिकोण दक्षिणी फ्लोरिडा के उत्तर में स्थित बरमूदा और पूर्व में बहामास के पास से पॅटरोरिको के पास एक बिन्दु तक या ४० अंश देशान्तर रेखांश तक जाकर वापिस बरमूदा से मिलता है। संसार का ये त्रिकोण भाग एक अत्यन्त चिन्ताजनक तथा अविश्वासनीय स्थान है। यहां पर होने वाली रहस्यमयी घटनाओं का अभी तक कुछ भी पता नहीं चल सका है। इसे ही बरमूदा त्रिकोण कहा जाता है, इस स्थान पर १०० से अधिक वायुयान और पानी के जहाज रहस्यमय ढंग से गायब हो चुके हैं। इनमें अधिकतर सन् १९४५ के बाद हुए हैं। लगभग १००० से अधिक व्यक्ति भी इसी त्रिकोण भाग में आकर लापता हो गये हैं। अजीब बात ये है कि इन सब लापता व्यक्तियों में से किसी का शव या कोई और हिस्सा कभी नही मिला। किसी वायुयान या जहाज का कोई ध्वस्त भाग भी आज तक निरन्तर खोज के बाद भी नहीं मिला तथा ये रहस्यमय ढंग से गायब होने की घटनायें भी बढ़ती ही जा रही हैं। हालाँकि आकाश तथा समुद्रीय यानायात पहले से काफी बढ़ता जा रहा है। साथ ही खोज का कार्य भी पहले से कहीं कुशलता से किया जाता है। इसके अलावा हर बात का बहुत ही नियमित रिकार्ड भी रक्खा जाता है।

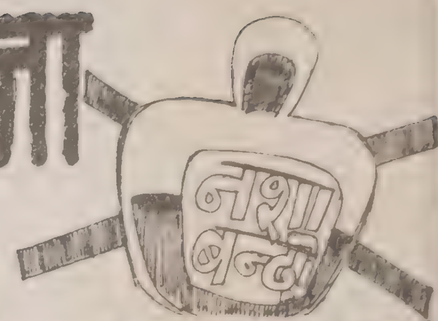
अधिकतर वायुयानों के गायब होने के समय उनका अपने उडने या पहुँचने के स्थान से पूर्ण सम्पर्क था तथा कुछ वायुयानों द्वारा गायब होने से पहले कुछ अजीब-अजीब संदेश भी पाये गये हैं। इन वायुयानों के चालकों के अनुसार उनके वायुयान का नियन्त्रण करने वाले पुर्जो ने काम करना बन्द कर दिया है तथा वायुयान के कम्पास की सुई बहुत तेजी से अजीब ढंग से चक्कर खा रही है तथा आकाश का रंग पीला हो गया है जबकि मौसम बिल्कुल साफ था। तथा समुद्र जो कि आस-पास बिल्कुल शान्त दिखाई देता है कुछ "ठीक सा प्रतीत नही होता" तथा इन सब बातों के होने का कोई और विशेष कारण नहीं बताया गया। ५ दिसम्बर सन् १९४५ को जल सेना के पाँच वायुयानों की एक टुकड़ी तथा उनको ढूंढ़ने निकले 'मारटिन मेरीनर' के गायब हो जाने के बाद एक-एक बहुत गहरी खोज की गई। ये पृथ्वी तथा समुद्रीय खोजों में सबसे ही जोरदार थी फिर भी खोये हुए विमानों के चालकों का कोई शव या किसी भी विमान का कोई भी टुकड़ा कहीं भी प्राप्त नहीं हुआ। इन विमानों के अतिरिक्त दूसरे यात्री विमान ऐसे ही गायब हो चुके हैं विमान जब गायब होता है तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे वो आकाश में हुए किसी छेद में चला गया है। बड़ी और छोटी नौकायें भी इस रहस्यमय स्थान पर गायब हुई हैं। ये नौकाएं अपने नाविकों सहित ऐसे गायब हुई हैं जैसे किसी अज्ञात शक्ति द्वारा उठा ली गई हों।

मैरीन सलफर क्वीन जैसे ४५० फुट लम्बे मालवाहक जहाज तथा यू० एस० एस० माइक्लोप्स जैसे १९००० टन के ३०९ व्यक्ति से भरे जहाज भी यहाँ इस ही प्रकार गायब हो चुके हैं। दूसरे जहाज और नौकायें भी नाविकों रहित तैरती पाई गई हैं। कभी-कभी इन नौकाओं में जीवित कुत्ता या पक्षी भी मिला है जो इस रहस्य के बारे में कुछ भी बताने में असमर्थ थे। अजीब बात ये है कि एक बार एक बोलने वाला तोता भी मनुष्यों के साथ ही जहाज से गायब हो गया था।

विमानों तथा जहाजो के गायब होने तथा उन पर सवार व्यक्तियों के बारे में बाद में कुछ भी पता न चलने वाले इस रहस्य के बारे में बहुत से अलग अनुमान लगाये गये है। जैसे अचानक ज्वारीय तरंग का आना जो कि भूकम्प के कारण आती हैं, आग के गोले जिनसे हवाई जहाजों में विस्फोट होता है, अनजानी उड़न तशतरी या सबमैरीन द्वारा अपहरण या कोई "भविष्य" जो की वर्तमान जीवन के नमूने चाहता हो। इसके अतिरिक्त एक और भी असाधारण अनुमान श्री एडगर कैयसी नामक भविष्य वक्ता द्वारा दिया गया था। इन्होंने लेजरबीय के पता लगने के बीसियों साल पहले बताया था कि प्राचीन अटलाँटिक में रहने वाले लोग क्रिस्टलस की ताकत का प्रयोग करते थे, ये लोग विशेषत: बिमीनी क्षेत्र में थे तथा क्रिस्टलस इन लोगों द्वारा बहामास में एन्ड्रोज समुद्र की जीभ के पास डुबाये गये थे। ये ही वो क्षेत्र है जहां बहुत से रहस्यमय गायब होने के हादसे हुए हैं। इस मत के अनुसार एक सैवारिक ताकत जो कि यदि ऐन्ड्रोज से एक मील भीतर भी डुबाया गया हो, अपनी शक्ति से आधुनिक इलैक्ट्रोनिक उपकरणों को जो कि विमानों तथा जहाजों में होते हैं पर अपनी शक्ति का गहरा दबाव अभी भी डाल सकता है।

अब जब आप इन रहस्यमय बरमूदा त्रिकोण की घटनाओं के बारे में पढ़ रहे हैं, ये घटनायें जारी हैं परन्तु आशा की जाती है कि मनुष्य जानकारी की खोज करते-करते कभी-न-कभी इसका पता लगाने में सफल अवश्य होगा।

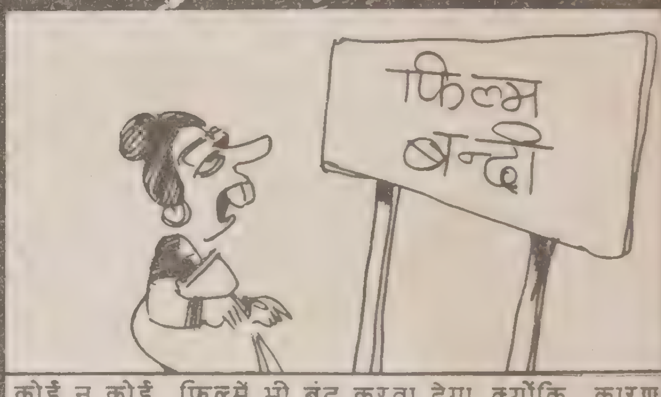
अन्धेर नगरी चौपट राजा



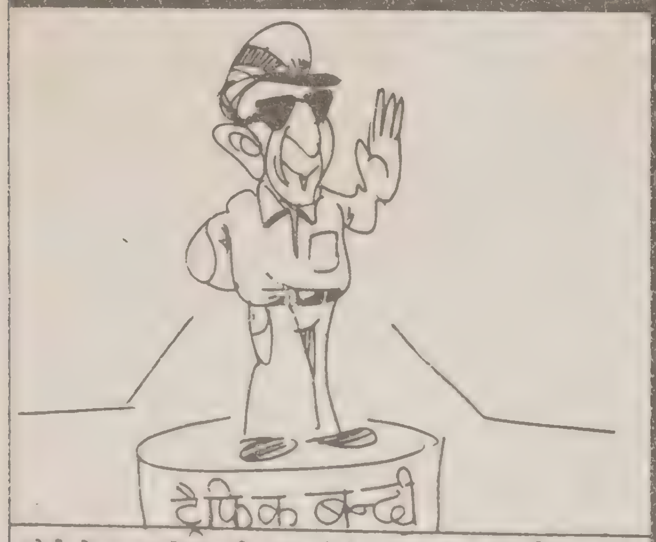
यह तो अब सारे देश वासियों को पता लग गया है कि जनता पार्टी सनकी आदमियों का जमघट है। एक व्यक्ति की सनक के फलस्वरूप देश भर में नशाबन्दी लागू होने वाली है। लाखों लोग रोटी रोजी से जायेंगे, जनता पार्टी ने दस वर्ष में बेकारी दूर करने का वादा किया था लेकिन इनके नेताओं की सनकों को देखते हुये लगता है कि बेकारी तो दूर होने से रही, हां यह जो लोग काम धंधे से लगे हैं उनका भी धंधा छुड़वा कर सबको बेकार बना कर जायेंगे। अगर इन सब नेताओं को अपनी-अपनी सनकें पूरी करने का मौका मिला तो यह क्या-क्या कर जायेंगे इसकी एक झलक—



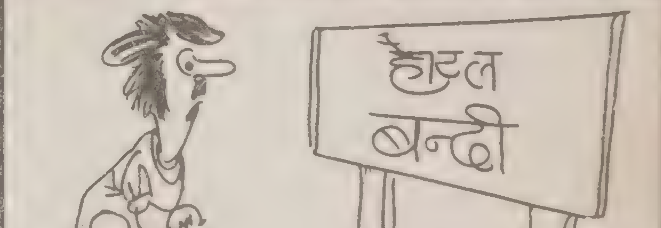
कोई नेता ऐसा आयेगा जो कहेगा मिठाइयां स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हैं! सब मिठाइयों की दुकानें बन्द। हलवाई का धंधा स्मगलिंग की तरह ही अपराध माना जायेगा। लोग खुशी के अवसर पर एक दूसरे को मूंगफलियों के पैकेट भेंट करेंगे।



कोई न कोई फिल्में भी बंद करवा देगा क्योंकि कारण यह होगा कि फिल्में सैक्स और हिंसा को बढ़ावा देती हैं जो कि हमारे प्राचीन संस्कृति के विरुद्ध हैं। सिनेमा हॉलों में जनता पार्टी के नेताओं के जन्म दिवसों पर आयोजित रैलियों में भाग लेने आये लोगों को ठहराया जायेगा यानि सिनेमा हाल धर्म शालाओं में बदल दी जायेंगी।



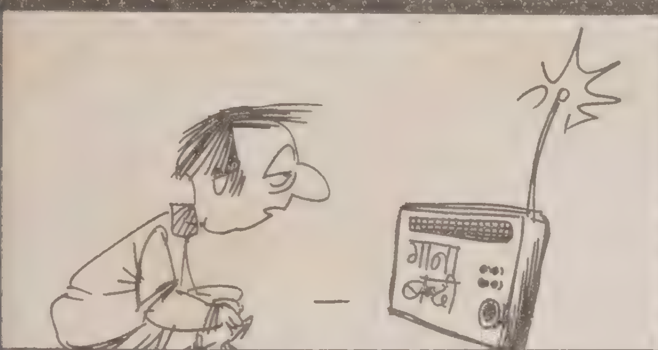
कोई नेता आयेगा जो यह सोचेगा कि रोज ही ट्रैफिक के कारण सैंकड़ों लोग मरते हैं। रेल-ट्रक व बसों के एक्सीडेंट होते हैं। सारा ट्रैफिक बन्द कर दो। देश में सारी यात्रायें पैदल होंगी। जूता उद्योग को भी बल मिलेगा। सब सड़कें मापेंगे।



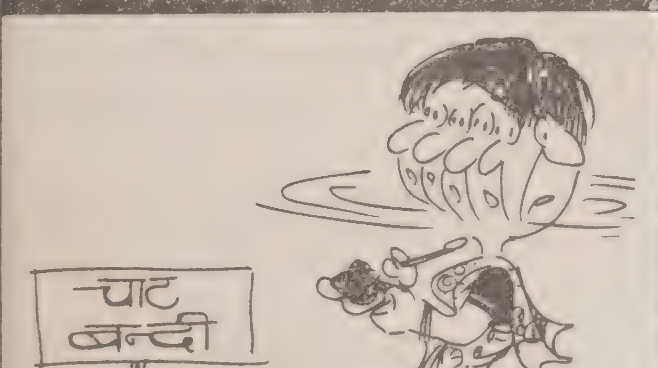
कोई नेता ऐसा आयेगा जो सोचेगा कि होटल का खाना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है, अतः सब होटल बंद करवा दो। जैराम जी की. जिसको खाना हो अपने घर खाओ वर्ना व्रत रख लो।



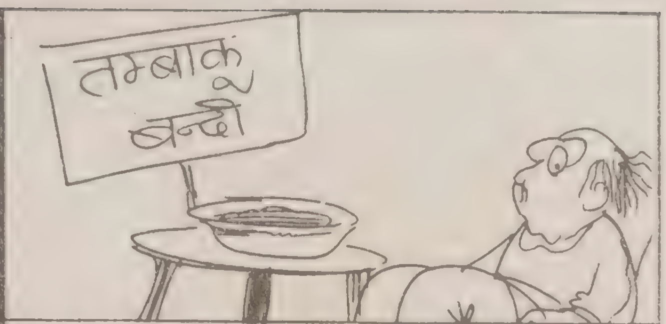
अब अजन्ता और खजुराहो में जो अश्लील मूर्तिकला है उस पर भी किसी जनता नेता का नजला गिरेगा। समाज विरोधी कलाकार का घिनौना कुकर्म कह कर इन्हें नष्ट कर दिया जायेगा। ब्रिटेन से प्राप्त जेगुआर विमान इन्हीं स्थानों को बम्बारी द्वारा नष्ट करने के काम में आयेंगे।



रेडियो पर प्रेम के गाने बन्द कर दिये जायेंगे क्योंकि कोई नेता यह दलील देगा कि ऐसे गाने युवा पीढ़ी को पथ भ्रष्ट करते हैं। गानों के स्थान पर जनता नेताओं के भाषण सस्वर पढ़े जायेंगे!



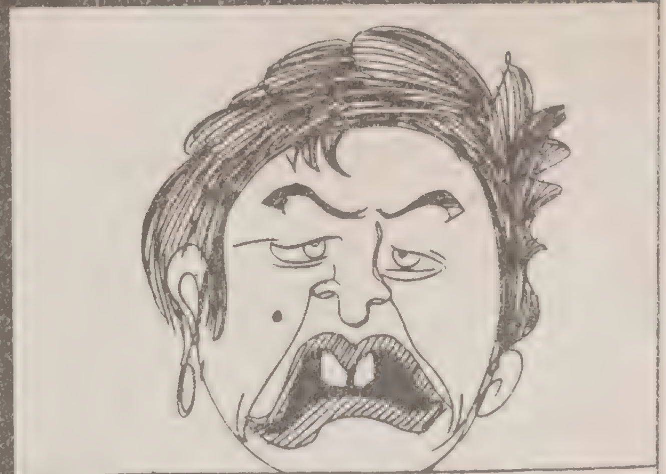
किसी नेता के दिमाग़ में यह भी ख्याल आ सकता है कि पटरी, रेहड़ियों और छाबड़ियों में बिकने वाला सारा माल स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। ये सब धंधे बन्द। चाट या गोलगप्पे इसी तरह चोरी से बिकेंगे जैसे आजकल चरस और अफीम बिकता है।



तम्बाकू सेहत के लिये ठाक नहीं है यह तो सब मानते हैं। जनता पार्टी का कोई सपूत सिगरेट-बीडी के कारखाने बंद करवा देगा फिर लोग चोरी छिपे तम्बाकू सेवन करेंगे जैसे चित्र में एक साहब तम्बाकू के पत्तों का बना तम्बाकू करी खाने जा रहे हैं!



हर काम में २८% जगहें पिछड़ी जातियों के लिये खाली रहेंगी। जैसे सरकारी हस्पतालों में मरने वालों में २८ प्रतिशत जगहें पिछड़ी जातियों के लिये सुरक्षित होंगी।



एक बात आपने नोट की होगी कि जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता मुस्कराते नहीं हैं। हर समय ऐसी रोनी सूरत लिये घूमते हैं जैसे नानी मरी हो। अतः कोई आश्चर्य नहीं भारत में हंसने-मुस्कराने पर भी प्रतिबन्ध लग जाये। फिर आपको दीवाना के मुख-पृष्ठ पर चिल्ली की सूरत ऐसी नजर आयेगी।

पिंजड़े के बाहर

शीला गुप्ता

उन दिनों पटना, गया, नवादा, नालंदा औरंगाबाद के जिले मगध कहलाते थे। इसी मगध राज्य में एक बड़ा व्यापारी था। वह अपने व्यापार के कामों से हमेशा देश-विदेश जाता था।

एक बार वह अरब पहुंचा, वहाँ उसे एक बड़ा सुन्दर तोता अपने झुण्ड में चहकता मिला. व्यापारी ने उस तोते को पकड़ लिया। उस तोते को लेकर व्यापारी अपने देश मगध लौट पड़ा।

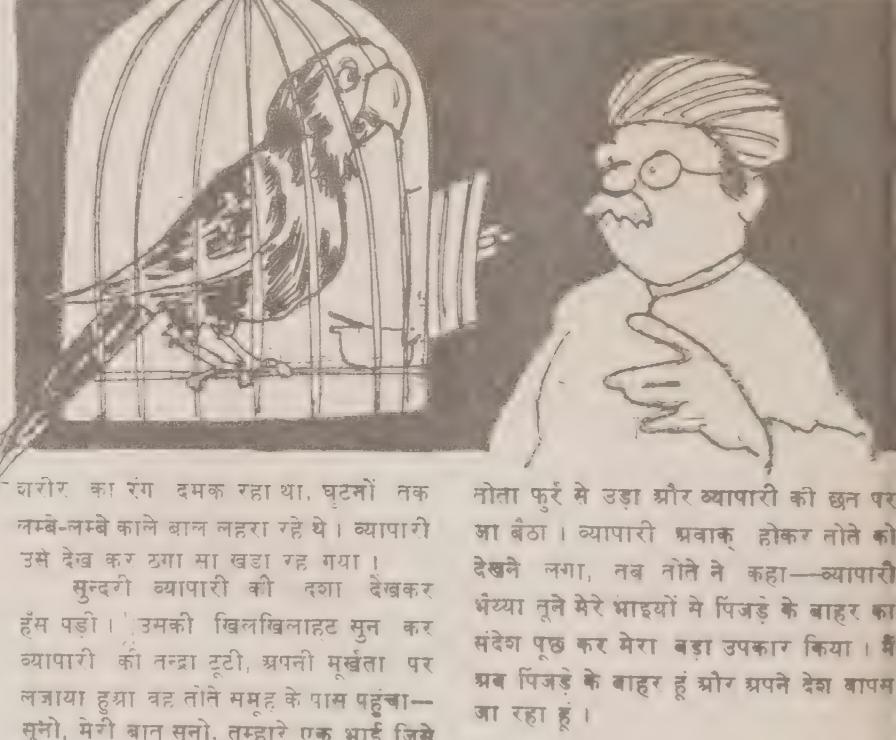
एक सुन्दर चांदी का पिंजड़ा विशेष रूप से उस सुन्दर तोते के लिए व्यापारी ने बनवाया. पर तोता उस बन्द पिंजड़े में खुश न था। उसे अपने स्वदेश की, अपने भाई-बहनों की याद आती और वह हमेशा पिंजड़े से बाहर आने का उपाय सोचता।

व्यापारी के लिए तो तोता मन बहलाने का अच्छा साधन बन गया। अवकाश के क्षणों में वह तोते से खूब बातें करता। धीरे-धीरे तोता मनुष्य की सारी बोली सीख गया। अब जब कभी व्यापारी तोते से बातें करता वह मनुष्य की बोली में ही उत्तर देता. व्यापारी को इससे हार्दिक प्रसन्नता होती. वह तोते के लिए काजू. किसमिस ले आता।

अपने आवश्यक काम से व्यापारी को फिर अरब जाना पड़ा। जाते समय वह फिर तोते के पास आया—प्यारे तोते मैं फिर तुम्हारे देश अरब जा रहा हूं. तुम कहो तुम्हारे लिए क्या लेता आऊं। अपने स्वदेश अरब का नाम सुन कर तोते की आंखें भर आयीं, वहां उसके कितने भाई-बहन खुले आसमान में विचर रहे थे।

व्यापारी पिंजड़े के और समीप आ गया. उसने पिंजड़े पर हाथ फिराते हुए फिर पूछा—कहो मेरे प्यारे तोते मैं तुम्हारे लिए अरब से क्या लेता आऊं? इस बार तोते के फड़फड़ाते होंठ खुल गये. वह कांप कर बोला—व्यापारी भैय्या तुम अरब जाकर मेरे भाई बहनों से मिलना और उनसे पिंजड़े के भीतर नहीं पिंजड़े के बाहर का संदेश पूछना। व्यापारी खुश होकर अरब के लिए चल पड़ा।

अरब पहुंच कर वह अपने व्यापार के कामों में लग गया, इस बार उसे अपने कामों में खूब सफलता मिली उसने अपने शौक का बहुत सा सामान खरीदा, फिर तोते को याद कर उसने तोते के भाई-बहनों से मिलना उचित समझा। वहां पहले से भी अधिक तोते चहक रहे थे, पर यह क्या उन तोतों के बीच एक अत्यन्त सुन्दर शहजादी शरीक युवती खड़ी थी। स्वर्णचम्पा की तरह उसके



शरीर का रंग दमक रहा था, घुटनों तक लम्बे-लम्बे काले बाल लहरा रहे थे। व्यापारी उसे देख कर ठगा सा खड़ा रह गया।

सुन्दरी व्यापारी की दशा देखकर हँस पड़ी। उसकी खिलखिलाहट सुन कर व्यापारी की तन्द्रा टूटी, अपनी मूर्खता पर लजाया हुआ वह तोते समूह के पास पहुंचा—सुनो, मेरी बात सुनो, तुम्हारे एक भाई जिसे मैं कुछ दिनों पूर्व हठ पूर्वक यहां से पकड़ कर मगध ले गया था उसने तुम सबों से पिंजड़े के बाहर का संदेश पूछा है।

व्यापारी की बात सुन-कर वह सुन्दर युवती तोते समूह को देखने लगी, आंखों ही आंखों में कुछ कह भी दिया किन्तु व्यापारी को उसके आंखों का संदेश पढ़ पाने का मौका भी न मिल पाया कि सभी तोते तड़प-तड़प कर बे दम हो गये। क्षणभर में मृतक समान सब भूमि पर गिर पड़े। व्यापारी की आंखें भर आयीं उसे निर्दोष तोतों की जान जाने का बड़ा दुःख हुआ। वह युवती भी न जाने कहां विलीन हो गयी।

बड़ा दुःखी हृदय लिए व्यापारी मग लौट आया। सबसे पहले तोते के पास पहुंचा तोता भी व्यापारी को देखते ही अपने भा बहनों का संदेश पूछने लगा—क्या बता मेरे प्यारे तोते तुम्हारे भाई बहनोंसे जब मैंने पिंजड़े के बाहर का संदेश पूछा तो सब तड़ कर भूमि पर गिर पड़े, मुझे उनके मरने का बहुत दुःख है…। अभी व्यापारी अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि तोता घड़ाम से पिंजड़े में गिरा।

तोते का शरीर बिलकुल स्थिर देख कर व्यापारीने समझा तोता मर गया उसने पिंजड़ा खोलकर तोते को बाहर निकालना चाहा तभी तोता फुर्र से उड़ा और व्यापारी की छत पर आ बैठा। व्यापारी अवाक् होकर तोते को देखने लगा, तब तोते ने कहा—व्यापारी भैय्या तूने मेरे भाइयों से पिंजड़े के बाहर का संदेश पूछ कर मेरा बड़ा उपकार किया। मैं अब पिंजड़े के बाहर हूं और अपने देश वापस जा रहा हूं।

व्यापारी रो पड़ा, तोते को भी दया आयी—अच्छा व्यापारी भइया मैं तो जा रहा हूं किन्तु तुमसे मित्रता हमेशा रखूंगा पर पिंजड़े के बाहर से, भीतर से नहीं।

अरब पहुंच कर वह भाव-विभोर हो उठा, अपने देश की मिट्टी भी कैसी प्यारी होती है। तोते ने उस सुन्दर युवती का विवाह व्यापारीसे कराया जिससे व्यापारी का सूना घर चमक उठा। तोते से उसकी मैत्री भी घनी हो गयी किन्तु फिर कभी तोता पिंजड़े के भीतर न आया, वह मैत्री 'पिंजड़े के बाहर' ही सुरक्षित थी। ●

बन्द करो बकवास


प्यार में कभी-कभी ऐसा भी होता है, छोटी सी बात का फसाना बन जाता है।
बन्द करो बकवास, हमारी आपस की बात में दखल मत दो- ईडियट
मेरे सामने वाली खिड़की में इक चाँद सा टुकड़ा रहता है।
बन्द करो बकवास, मैं गंजा हूं तो तुम्हारा क्या जाता है ?
ये रातें, ये मौसम, नदी का किनारा, ये चंचल हवा
बन्द करो बकवास, अगर ऐसे मौसम में मूड बनाने का यही इन्तज़ाम करोगे तो शीघ्र ही निमोनिया के कारण मरोगे कवि साहब।

दीवाना का एक नया स्तंभ



इस स्तंभ में आप गरीबचन्द चूहे से कोई भी सवाल पूछ सकते हैं। अपनी छोटी-छोटी समस्या पूछ सकते हैं। अपने विचार बता सकते हैं। गरीबचन्द की राय पूछ सकते हैं! अपने माता-पिता और अध्यापकों के बारे में गिले-शिकवे कर सकते हैं!...गरीबचन्द आपकी बातों का गरीब छाप जवाब देगा। उदाहरण के लिये—

प्रश्न— मेरी मां मुझे आइसक्रीम नहीं खाने देती! मैं क्या करूं?

गरीबचन्द—आप उन्हें बताइये कि बचपन में जवाहरलाल नेहरू, सी० वी० रमण, रवीन्द्रनाथ टैगोर, आइंसटीन और कैनेडी वगैरह सब आइसक्रीम खाया करते थे।

प्रश्न— मुझे चूहों से डर लगता है?

गरीबचन्द—आप अपना नाम बदल कर बिल्ला रखिये शायद डर न लगे।

प्रश्न— मुझे मां-बाप नया कपड़ा नहीं देते। बड़े भाई को जो कपड़े छोटे पड़ जाते हैं बस वही मिलते हैं?

गरीबचन्द—आपकी किस्मत भगवान ने सैकिन्ड हैंड पैन से लिखी होगी।

प्रश्न— मुझे परीक्षा में नम्बर कम मिले हैं। पिता जी को रिपोर्ट कार्ड कैसे दिखाऊं?

गरीबचन्द—जिस दिन पिता जी को अपनी ऐनक न मिल रही हो उस दिन कार्ड दिखायें।

प्रश्न भेजने का पता—

(गरीबचन्द की डाक)
सम्पादक, दीवाना
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

तर्क कुतर्क

आप भी इसमें भाग लीजिये

दैनिक बोल-चाल में हम कई-कई ऐसी चीजें बोलते हैं कि यदि आप उन पर गौर करें तो उनके कई पहलू नजर आयेंगे और आप अपने कुतर्क के सहारे उस बोल पर बिल्कुल नया और मजेदार जवाब दे सकते हैं। उदाहरण के तौर पर प्रायः हम पूछते हैं कि आपकी श्रीमती जी कैसी हैं? गौर से देखिये इसके कई ऊट-पटांग जवाब हो सकते हैं। आपकी श्रीमती जी कैसी हैं का अर्थ यह भी हो सकता है कि उनकी तुलनात्मक रिपोर्ट मांगी जा रही है। अतः यह पूछे जाने पर कि श्रीमती जी कैसी हैं उत्तर दिया जा सकता है 'किसकी तुलना में?' इसी प्रकार और उदाहरण पढ़िये आपकी समझ में आ जायेगा।

आज आसमान साफ है।

कुतर्क—कल किसी ने गन्दा कर रखा था क्या?

मैं सुबह-सुबह भगवान का नाम लेता हूँ।

कुतर्क—आपको लेना ही आता है देना तो सीखा ही नहीं।

मेरी तो किस्मत ही खुल गई।

कुतर्क—घटिया धागे से सिलाई करा रखी होगी।

तुमने मेरा नाम लिया?

कुतर्क—क्यों? मिल नहीं रहा है क्या?

कहाँ जा रहे हो भई?

कुतर्क—सुनहरे भविष्य की ओर।

आपका ही दिया खाते हैं हम रोज।

कुतर्क—मैं भी हैरान था कि रोज दीये कहाँ गायब हो जाते हैं?

मेरे सिर में दर्द रहता है।

कुतर्क—कितना किराया देता है आपको?

मेरे नाक से पानी बहता है।

कुतर्क—औरों के नाक से क्या दूध-घी बहता है?

एक लघु कथा

प्रतीक्षा

आजाद रामपुरी

बनवासी रामचन्द्र जी, जनकनन्दिनी सीता एवं अनुज लछमण के साथ गंगा के तट पर केवट के द्वारा नाव लाये जाने के लिये तीव्र प्रतीक्षारत थे! केवट था कि नाव लाने का नाम ही नहीं ले रहा था! अन्ततोगत्वा रामचन्द्र जी ने विनम्र भाव से केवट से नाव न लाये जाने का कारण पूछा तो केवट सहज भाव से कहने लगा—

'हुजूर वह त्रेतायुग का समय गया, अब चौदह साल की लम्बी प्रतीक्षा के बाद मैं अपनी सम्भावित मजदूरी के सहारे कैसे जीवित रह सकता हूं।'

'अच्छा यह बात है' रामचन्द्र जी ने मन्द-मन्द मुस्कान के साथ कहा और सीताजी की ओर संकेत करते हुये उन्हें मुद्रिका उतारकर केवट को देने का आग्रह किया तो सीताजी ने तत्काल वैसा ही कर दिया।

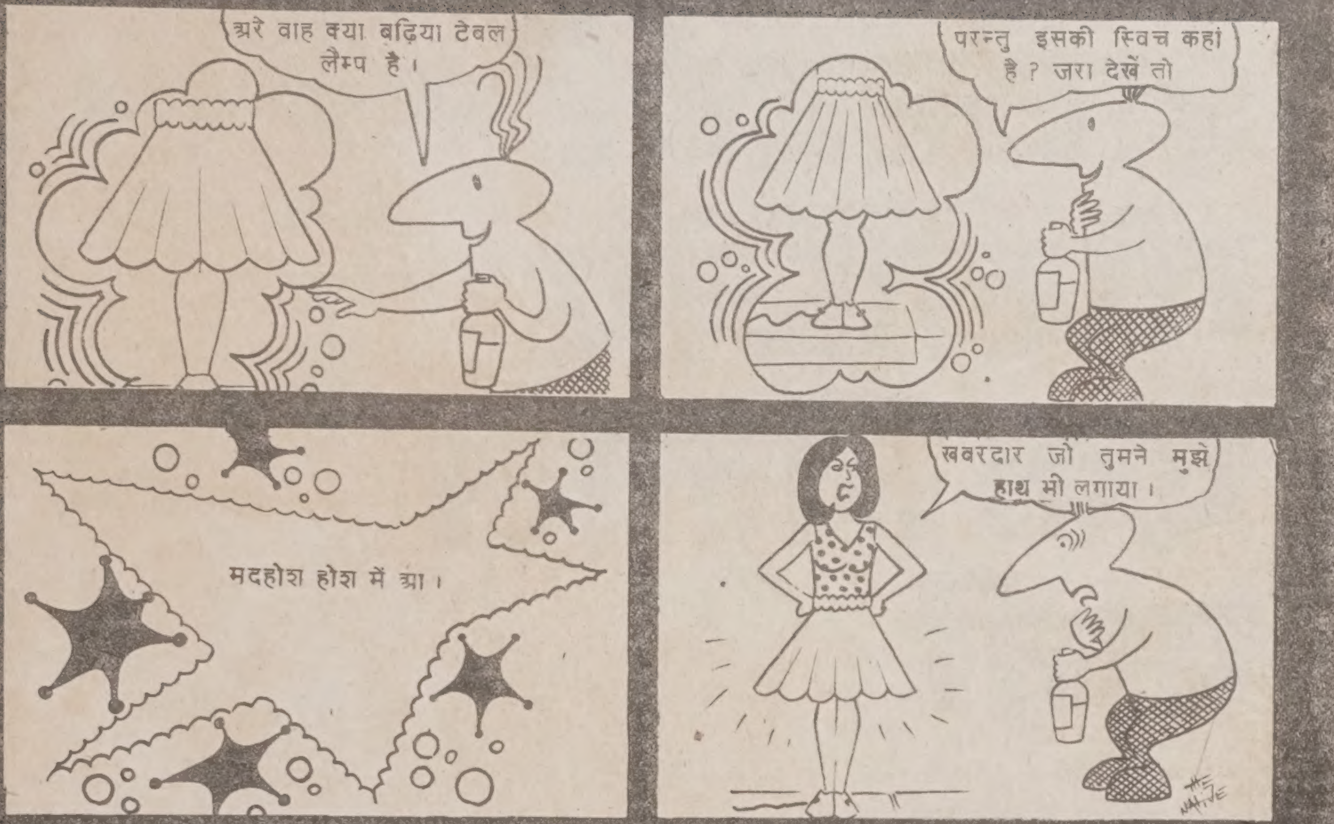
'भाई अब तो हमें पार कर दो!' रामचन्द्रजी ने आगे प्रश्नात्मक ढंग से कहा तो केवट निः संकोच भाव से कहने लगाः—

'हुजूर, मुझे आपके चरणों में तो नहीं किन्तु इस नारी के चरणों में अवश्य कोई जादू दिखाई देता है, । हो सकता है कि इस जादू के प्रभाव से नाव डूब जाये और आपको प्राणों से हाथ धोना पड़ जाये। अतः यदि आपकी आज्ञा हो तो पहले इस नारी को पार लगा दूँ जिससे सम्भावित खतरा टाल जा सके।'

इस पर रामचन्द्रजी तत्काल सहमत हो गये और केवट सीता जी को पार लेकर बनवास में चला गया! रामचन्द्र जी आज तक केवट के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

गंगातट भारतीय प्रजातंत्र हैं जहाँ राम रूपी जनता ने जनकनन्दिनी सीता रूपी सत्ता जनता को भूले नेता—केवट को प्रदान कर दी जो सत्ता के मद में भूल गया और जनता आज तक उनके लौटने की प्रतीक्षा इस आशा से कर रही है कि शायद वह पांच वर्ष (चुनाव के समय) लौट कर आये! रामचन्द्र जी द्वारा सीता से मुद्रिका दिलवाना नेता (केवट) के भाषण जाल से मोहित हो उठे विजयी बन पाना है।

मदहोश



परिचय : फिल्मी तरंग में

—राम स्वरूप विज

जी···मेरा परिचय, मेरा नाम जोकर !
हूं आवारा और लोफर !!
रात के अन्धेरे में—
प्रभात के सवेरे हैं—
काले बाजार में ब्लैक मेल का धंधा करता हूं।
काल गर्ल से मुहब्बत करता हूँ ॥
अजी क्या कहा ? मेरा निवास-स्थान ?
वहीं हैं मेहरबान ! मेरा निवास-स्थान—
है झुक गया जहाँ आसमान।
दूर हिमालय की गोद में—
जहाँ ज्वेलथीफ, गैम्बलर पाकेट मारों का है डेरा !
वहीं है मेरा रैन-बसेरा !!
मेरा गांव मेरा देश भरा पड़ा है—
नमक हराम, बेईमान, चालबाजों से—
चार सौ बीस, बेशर्म, धोखेबाजों से—
सौ साल पहले सोने की चिड़िया था हिन्दुस्तान हमारा !
अफसोस ! अब तो धुन्ध से घिरा ये गुलिस्तां हमारा !!
हाँ-हाँ-पूछो ? क्या जानना चाहते हो ?···हमारी सभ्यता ?
हम सब चोर हैं !



हम सब कातिल हैं !!
हम सब उस्ताद हैं !!!
उस्तादों के उस्ताद हैं !!!!
पैसे वालों का है इन्साफ यहाँ।
है कौन सच्चा ? कौन झूठा ? फिजूल बात यहां ॥
हम दुश्मन हैं शराफत के मिलाप के।
और जिगरी दोस्त हैं हर शरीफ बदमाश के ॥
सच पूछो तो अपने लोग हैं
अनाड़ी, बेवकूफ गंवार—
जंगली, जानवर, गद्दार !

शरीरदर्द? तो लीजिए एक गिलास पानी



और सिर्फ़ एक

सेरिडॉन

सवाल यह है?

सवाल यह है ?

सवाल यह है ?

ा इन का भी कोई जवाब है ?





पृष्ठ १३ का शेष
जलायी तो उसकी नजर एक लिफाफे पर पड़ी । उठाकर देखा । मधु का पत्र था । उस ने जल्दी से लिफाफा खोल डाला ।

मधु ने लिखा था—

'क्यों, मुझे भूल गये ?

—मधु'

सुशील के होठों पर मुस्कराहट दौड़ गयी । दिल में एक मीठा-मीठा दर्द जाग उठा । यादों के काफिले घंटियाँ बजाते हुए गुजर गये । यादों के झरोखे खुल गये ।

उसने कलम और कागज उठाया और लिखने लगा—

'मधु !

तुम्हारा पत्र मिला । ऐसा लगा जैसे गुलाब के फूल खिलते चले जा रहे हैं । जहाँ तक नजर जाती है, दीवाली दिखायी देती है । बहारें नाच रही हैं । सारा ब्रह्माण्ड झूम रहा है ।

तुम्हारी एक लाइन ही मेरे मन को शान्ति पहुँचाने के लिए पर्याप्त है ।

तुमने यह कैसे सोच लिया कि मैं तुम्हें भूल गया हूं ? याद रखो, मरने के बाद स्वर्ग के स्वर्ण-महल में तुम्हारी याद के लिए चिराग जलाये प्रतीक्षा करता रहूंगा ।

दांते ने अपनी प्रेमिका बेट्रिस की और पेट्राक ने अपनी प्रेमिका लोरा की याद में आकाश की सैर की । लेकिन मैं···इस दुनिया को छोड़ने के बाद भी इस दुनिया के कण-कण में तुम्हें देखूंगा ।

रंजन भाई की बहिन सीमा के कारण मजबूर हूं । क्या करूँ ? वह रंजन भाई की बहिन है । एक वकील साहब को मैंने उसके लिए पसन्द किया है । दुआ करो, वकील साहब मान जायें ।

मैं जल्दी आने की कोशिश करूँगा । तुम्हारी परेशानी को मैं अनुभव करता हूं । लेकिन रंजन भाई तो हैं ही । ख्याल रखना कि उन्हें कोई बात महसूस होने न पाए ।

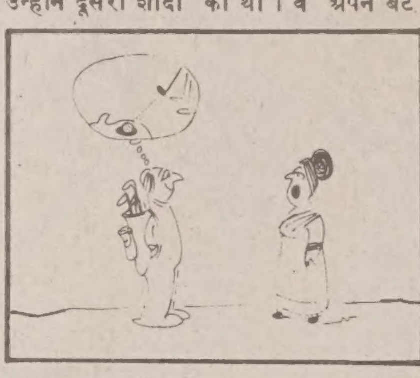
तुम्हारा—

सुशील''

पत्र लिफाफे में बन्द करने के बाद उसे ऐसा लगा जैसे वह अभी-अभी मधु से बातें कर रहा था । दूसरे दिन कुछ बेफिक्री सी रही । यूनिवर्सिटी में लॉ के क्लास दोपहर बारह बजे से लगा करते थे । सीमा होस्टल में रहती थी और लड़कियों के झुंड के साथ यूनिवर्सिटी के कम्पाउण्ड में चक्कर लगाती रहती थी । उसके बारे में मशहूर था कि वह होस्टल में नौ बजे के बाद ही पहुंचती है और कभी-कभी तो सारी रात गायब रही है । कहां जाती है, यह कोई नहीं जानता था ।

होस्टल की वार्डन उसकी जरखरीद गुलाम थी । इसलिए किसकी हिम्मत थी जो उंगली उठाता ! लेकिन वहाँ अब उसकी दिनचर्या में अन्तर आ गया था । सब लोग जान गये थे कि अब वह अपने भाई रंजन के मित्र सुशील के साथ रहती है और सुशील रंजन के मित्र नहीं भाई हैं । इसलिए कोई स्कैंडिल नहीं बन सका ।

वकील साहब का नाम किशोर था । उनके पिता रिटायर्ड डिप्टी कलक्टर थे । उन्होंने दूसरी शादी की थी । वे अपने बेटे



से अलग रहते थे । किशोर की वकालत खूब जम गयी थी । वह सेशन में कत्ल के मुकदमों को देखा करता था । चालीस-पचास रुपये रोज कमा लेता था । नियमित रूप से दो-सौ रुपये अपने पिता को देता था । वह अकेला रहता था । अड़तीस-उन्तालीस साल की उम्र थी । कहा जाता था कि एक शादी हुई थी । सिवाय इसके कि हफ्ते में एक दिन कोई औरत उनके घर जरूर दिखाई देती थी ।

किशोर भी सुशील को बहुत चाहने लगा था और उसके साथ पॉलिटिक्स पर इस अन्दाज में बहस किया करता था जैसे अपने मुवक्किल से फीस तय कर रहा हो । कंजूस था लेकिन औरतों के मामले में खुले हाथ खर्च करता था । वह उसूलों का पक्का था । अपने मुहल्ले की औरतों को देखकर नजरें झुका लेता था । लेकिन मुहल्ले के बाहर जो भी औरत दिखाई दे जाती थी, होठों पर जीभ जरूर फेर लेता था ।

एक दिन सुशील ने सीमा की चर्चा की ।

'क्या मामला है पार्टनर ?' किशोर ने बेतकल्लुफी से कहा, 'तुम आजकल बहुत घूमते हो उसके साथ ।'

'आपको बताया न, वह मेरे मित्र की बहिन हैं और···!'

'यार, अपनी समझ में यह औरतों का पढ़ना-वढ़ना नहीं आता—लड़की की शादी कर दी जाए, घर-बार सँभाले !'

'ठीक कहते हैं आप ! मैं भी ऐसा ही सोचता हूं ।'

'तुम सोचते हो ?' किशोर चौंक पड़ा ।

'अरे भई, जब सोचते हो तो शादी क्यों नहीं कर लेते । सीमा मित्र की बहिन है । जानी-पहचानी लड़की है ।'

'आप कैसी बातें करते हैं वकील साहब ! उसे तो मैं अपनी बहिन ही समझता हूं ।'

'समझते ही हो न ? है तो नहीं । पार्टनर- समझना और होना, दो अलग-अलग शब्द हैं ।'

'मेरे निकट एक ही हैं । मैंने तो कुछ और ही सोचा था ।'

'क्या ?'

'आपके बारे में ?'

'अरे बाप रे !' किशोर ने सिर हिलाते हुए कहा, 'देखो पार्टनर ! सिनेमा देखने और घूमने की और बात है । लेकिन शादी···अरे बाप रे···!'

'मैं तो समझता हूं कि अपने जीवन को नियमित बनाने के लिए यह जरूरी है कि आप शादी कर लें ।'

'पार्टनर ! मैं मार न खाने वाला आदमी हूं ।'

'आप बहुत भले आदमी हैं । मजबूरी इंसान को सब कुछ करा लेती है ।'

शेष आगामी अंक मे